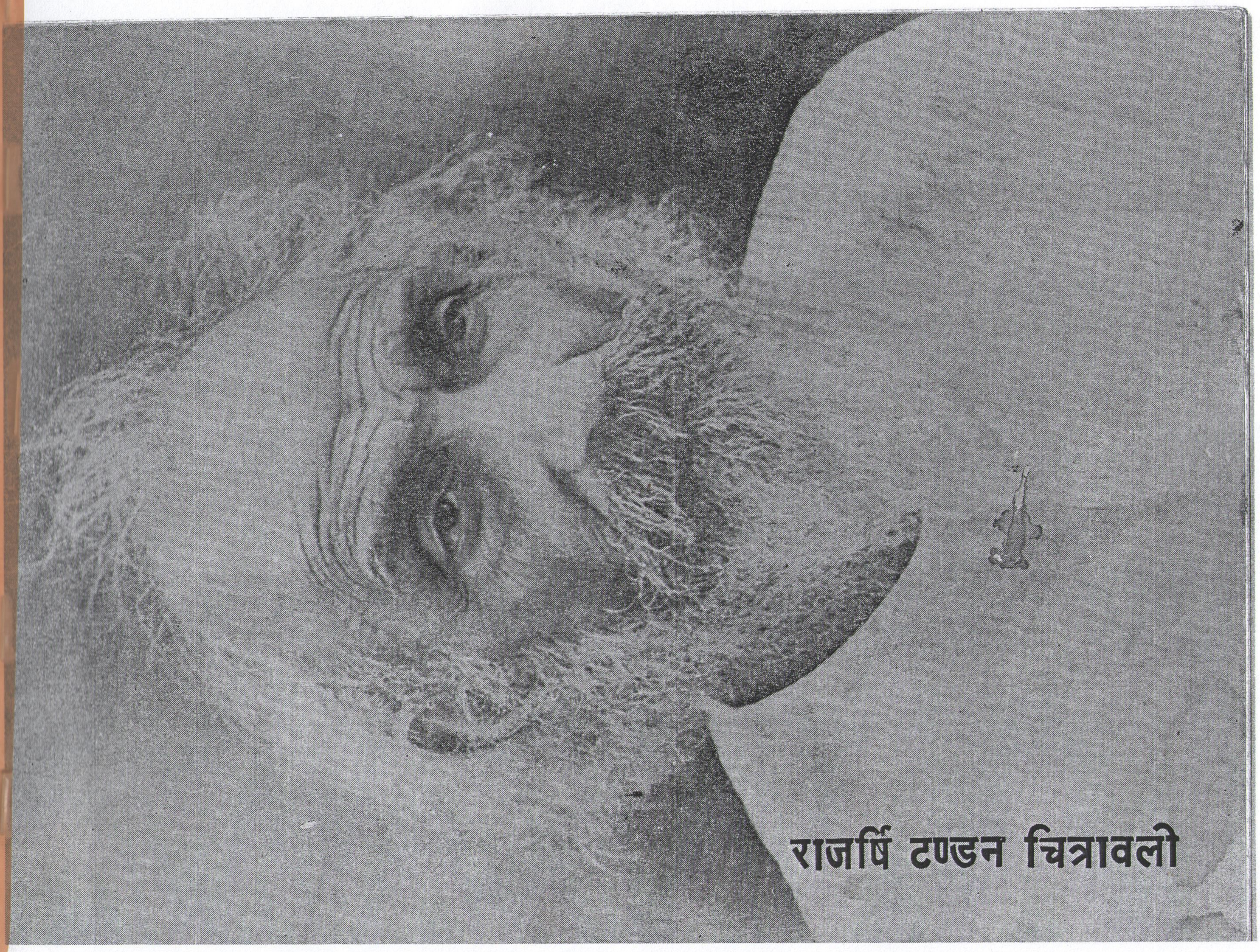

राजर्षि टण्डन चित्रावली

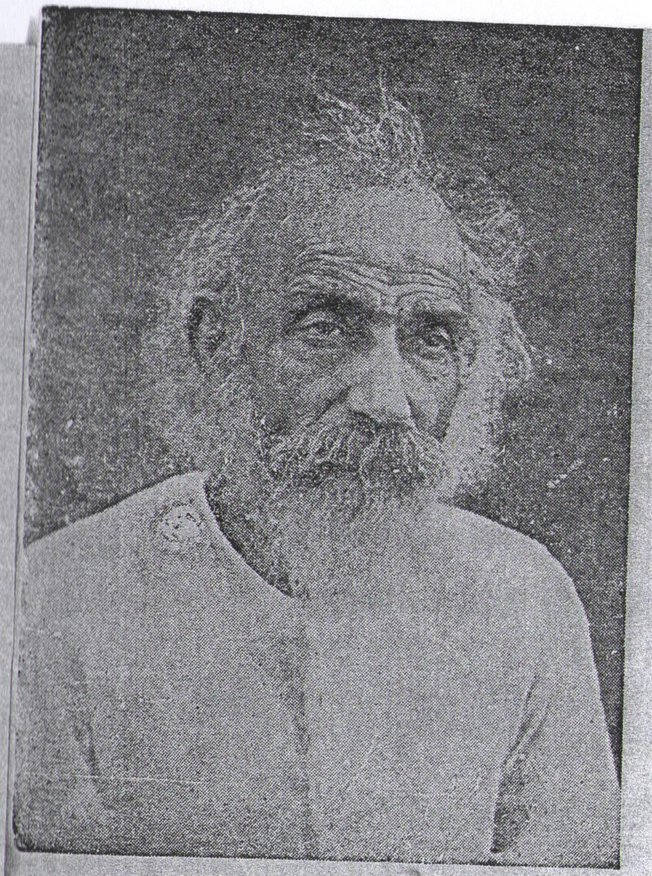

⊙⊙

हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग

निवेदन

प्रातःस्मरणीय राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन का हिन्दी साहित्य अभेद्य सम्बन्ध था। वस्तुतः यह कहने में कोई अत्युक्ति नहीं है हिन्दी साहित्य सम्मेलन का जो कुछ भी स्वरूप और आकार-प्रकार नि उन सब के निर्माण में टण्डन जी का सर्वोपरि हाथ था। टण्डन जी के ही "हिन्दी साहित्य सम्मेलन से मेरा सम्बन्ध उसके प्रारम्भ काल से है। हिन्दी के काम में मेरे जीवन की बहुमूल्य घड़ियाँ बीती हैं। सम्मेलन में समा गया है।" सम्मेलन के प्राण प्रतिष्ठापक और समुन्नायक सम्मेलन और हिन्दी-जगत् को सदैव ही प्रेरणा प्रदान करेगी।

सम्मेलन उनके पूज्य एवं वरद अवदान को कभी भूल नहीं सक पावन स्मृति को अक्षुण्ण रखने की दृष्टि से इस वर्ष हिन्दी साहित्य सम्मे ने राजर्षि टण्डन के जीवन से संबंधित सम्मेलन संग्रहालय में संग्रहीत चित्रों से युक्त "राजर्षि टण्डन चित्रावली" का प्रकाशन किया है।

यह चित्रावली राजर्षि टण्डन की पुण्यस्मृति में सम्मेलन की पुष्पांजलि है।

विश्वास है, सम्मेलन द्वारा प्रकाशित इस चित्रावली से स्वर्ग पुरुषोत्तमदास टण्डन के प्रति श्रद्धा भावना रखने वाले हिन्दी-प्रेमियों होगा।

प्रभात
प्रधान
हिन्दी साहित्य
प्रया

राजर्षि टण्डन जयन्ती
१ अगस्त, १९७७

राजर्षि टण्डन जीवन-क्रम

⊙⊙

१. जन्म	१ अगस्त,	१८८२
२. इन्ट्रेंस परीक्षा		१८९७
३. विवाह		१८९७
४. इन्टर परीक्षा		१८९९
५. बी० ए० परीक्षा		१९०४
६. कांग्रेस अधिवेशन के प्रतिनिधि		१९०६
७. एम० ए० परीक्षा		१९०७
८. वकालत		१९०८
९. हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना मालवीय जी के साथ प्रथम मंत्री		१९१०
१०. जलियाँवाला बाग की जाँच कमेटी के सदस्य		१९१९
११. प्रथम जेलयात्रा १॥ वर्ष		१९२१
१२. अध्यक्ष, हिन्दी साहित्य सम्मेलन		१९२२
१३. उत्तर प्रदेश काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष (गोरखपुर)		१९२३
१४. पंजाब नेशनल बैंक के मंत्री		१९२५-२९
१५. अध्यक्ष, लोक सेवक मण्डल		१९२९
१६. जन आन्दोलन के सिलसिले में बस्ती जिले से निष्कासन, आज्ञा न मानने पर जेल		१९३०
१७. लगानबन्दी आन्दोलन, अध्यक्ष किसान सभा		१९३०
१८. गांधी जी के साथ डाँडी यात्रा		१९३०
१९. शराब की दुकान और विदेशी कपड़ों के विरोध का आन्दोलन		१९३१
२०. गोंडा जिले में बन्दी		१९३१
२१. विधान सभा के सदस्य		१९३७
२२. अध्यक्ष, विधान सभा		१९३७
२३. विधान सभा से त्याग-पत्र		१९३७
२४. भारत छोड़ो आन्दोलन		१९४२
२५. अन्तिम जेल यात्रा	९ अगस्त,	१९४२
२६. देश विभाजन का विरोध		१९४७
२७. विधान सभा के पुनः अध्यक्ष		१९४७
२८. संविधान परिषद् के सदस्य		१९४७
२९. देवनागरी के अंकों को न स्वीकार करने पर संविधान परिषद् से त्याग-पत्र		१९४८
३०. उत्तर प्रदेश काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष		१९४८
३१. अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष		१९५०
३२. प्रयाग से लोकसभा के सदस्य		१९५२
३३. उत्तर प्रदेश विधान सभा से राज्यसभा सदस्य		१९५६
३४. भारत-रत्न की उपाधि		१९६१
३५. इहलीला समाप्ति	१ जुलाई,	१९६२

●●

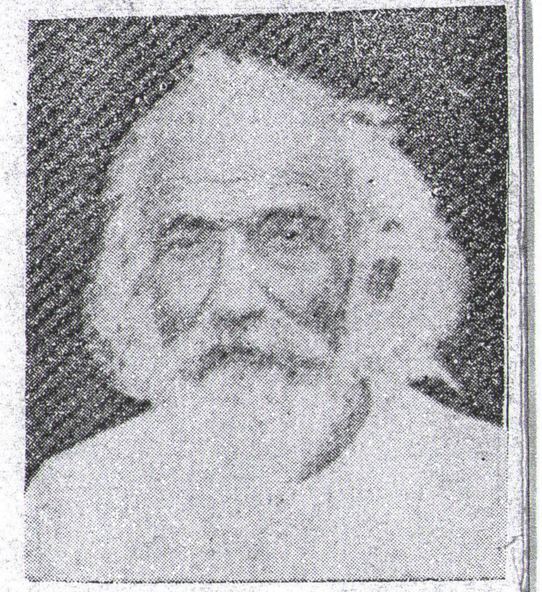

प्रकाशक

प्रभात शास्त्री

प्रधानमंत्री : हिन्दी साहित्य सम्मेलन

प्रयाग

⊙

मुद्रक

सम्मेलन मुद्रणालय

प्रयाग

⊙

मूल्य ५ रुपया

राजर्षि : किशोरावस्था में

⊙ मालवीय जी की स्मृति ने मुझे सदा शक्ति दी है। मेरे जीवन को बनाने में उनका हाथ है। मेरे ऊपर मालवीय जी की छाया इतनी पड़ी है कि आज सोचने लगता हूँ कि मुझ में मेरा अपना क्या है।●●●

इलाहाबाद हाईकोर्ट के अधिवक्ता के रूप में

⊙ हमारे जीवन का मुख्य आदर्श नैतिकता है। लेकिन आज जितने काम हैं; क्या व्यापार, क्या सरकारी नौकरी, क्या इन्जीनियरिंग, क्या ठेकेदारी, क्या वकालत सब जगह आज अनैतिकता बढ़ी हुई है।...यह महल शुद्ध कौड़ी पर नहीं उठे हैं। मैं उनको देखता हूँ तो हृदय रो उठता है।●●●

एक प्रबुद्ध नागरिक

⊙ जातीय साहित्य मनुष्य के बाह्य एवम् आन्तरिक जीवन का चित्र है। किसी जाति के अधिक सभ्य और समद्धिशाली होने का अर्थ है उसमें अधिकाधिक विद्वान्, बुद्धिमान् और चिन्तनशील मनुष्यों की उत्पत्ति हो। ऐसे मनुष्यों के आभ्यन्तरिक और बाह्य उन्नत जीवन का आभास उनके जातीय साहित्य में विद्यमान रहता है।●●●

[जातीय साहित्य से]

आन्दोलनकारी की मुद्रा

⊙ विदेशी भाषा के द्वारा मानसिक शक्तियों के प्रादुर्भाव का विचार सर्वथा असम्भव है। किसी भाषा का साहित्य कितना ही सर्वांगीण क्यों न हो, परन्तु वह मातृभाषा के साहित्य से अधिक आदरणीय नहीं हो सकता। सर्वसाधारण की उन्नति मातृभाषा के द्वारा ही हो सकती है। वे उसी से लाभ उठा सकते हैं, जो उनकी मातृभाषा में है।●●●

स्वाधीनता-संग्राम की ओर

⊙ देश के सामने इस समय अनेक समस्यायें हैं, जिनमें भाषा की समस्या, गौ रक्षा की समस्या तथा जीवन में नैतिक उत्थान की समस्या भी है। देश का नैतिक अधःपतन पराधीनता का परिणाम था। पराधीनता का सबसे बड़ा अभिशाप ही यह है कि हम विदेशी शासन के कारण अपने नैतिक आदर्शों के आधार पर समाज का निर्माण नहीं कर सकते। देश में अंग्रेजी की जड़ों के जमने का कारण भी अपनी इच्छा के अनुसार समाज का निर्माण न कर सकने की विवशता ही है।●●●

[भारतीय संस्कृति का सन्देश से]

असहयोग आन्दोलन में जेल से निकलने के बाद

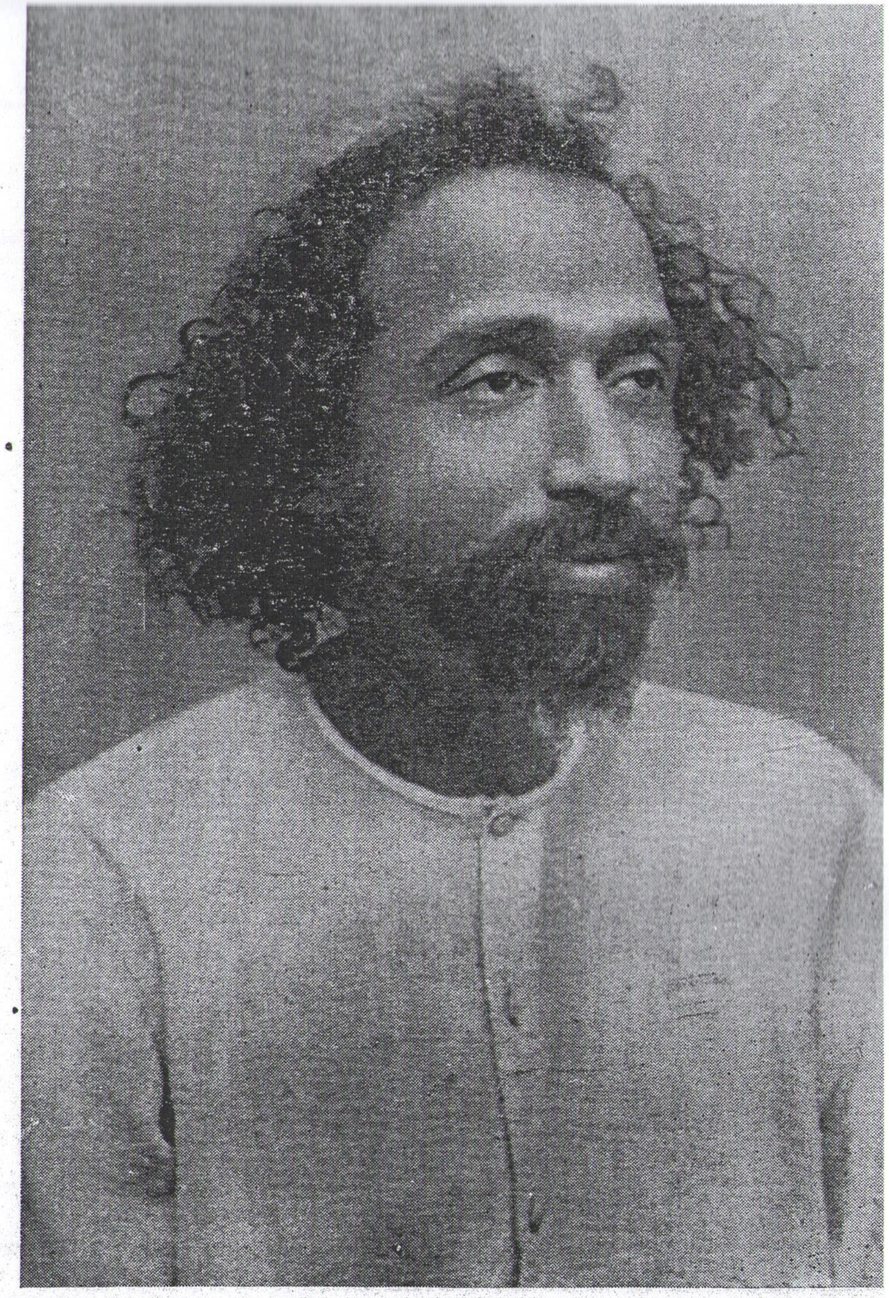

⊙ अपने भाइयों को मैं सचेत करना चाहता हूँ कि वह मोम न बनें और आसानी से पिघल न जाएँ। छोटी-छोटी-सी बातों के लिए ही हम अपनी भाषा को या संस्कृति को न बदलें। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि समय पर चीजें बदलती हैं—"समय भेदेन धर्म भेदः"। मैं समय की आवश्यकता देख कर परिवर्तन का पक्षपाती हूँ।●●●

किसान सभा के अध्यक्ष

⊙ हमारी राष्ट्रभाषा का असली स्रोत हमारी राष्ट्रीयता ही है। इस बात को मैं जानता हूँ क्योंकि इस काम में मैं बहुत वर्षों से लगा हूँ कि हमारी आधुनिक राष्ट्रीयता के उत्थान में राष्ट्रभाषा की गहरी सहायता है। जिस भाषा को हमारी जनता समझ नहीं सकती, उससे हमें राष्ट्रीयता की प्रेरणा कैसे मिल सकती है! ●●●

रचनात्मक कार्यकर्ता

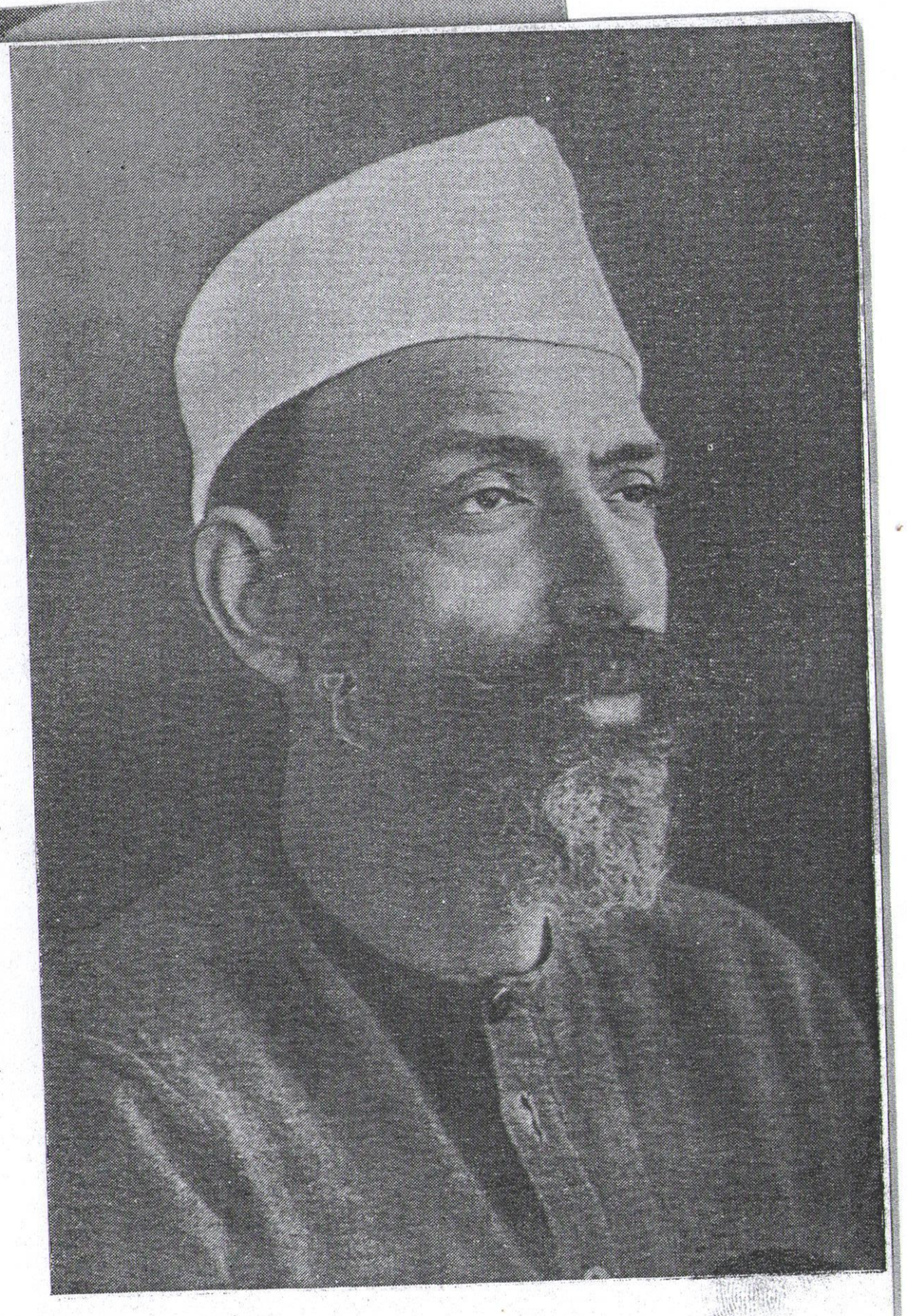

⊙ राष्ट्रीयता का भाव रखने वालों में कदाचित ही कोई ऐसे हों, जिन्हें मातृभाषा पर प्रगाढ़ ममता न हो, जिन पर उसका बलिष्ठ और उत्साहवर्धक प्रभाव न पड़ा हो एवम् जो उसके मनोहर मोहन मंत्र के वश में न आए हों। मातृभाषा उनके स्वभाव का एक अंग है। उनके हृदय का प्रतिबिम्ब और उनके शरीर का वह एक भाग है, जो शारीरिक सौन्दर्य का प्रधान कारण है।●●●

[मातृभाषा की महत्ता से]

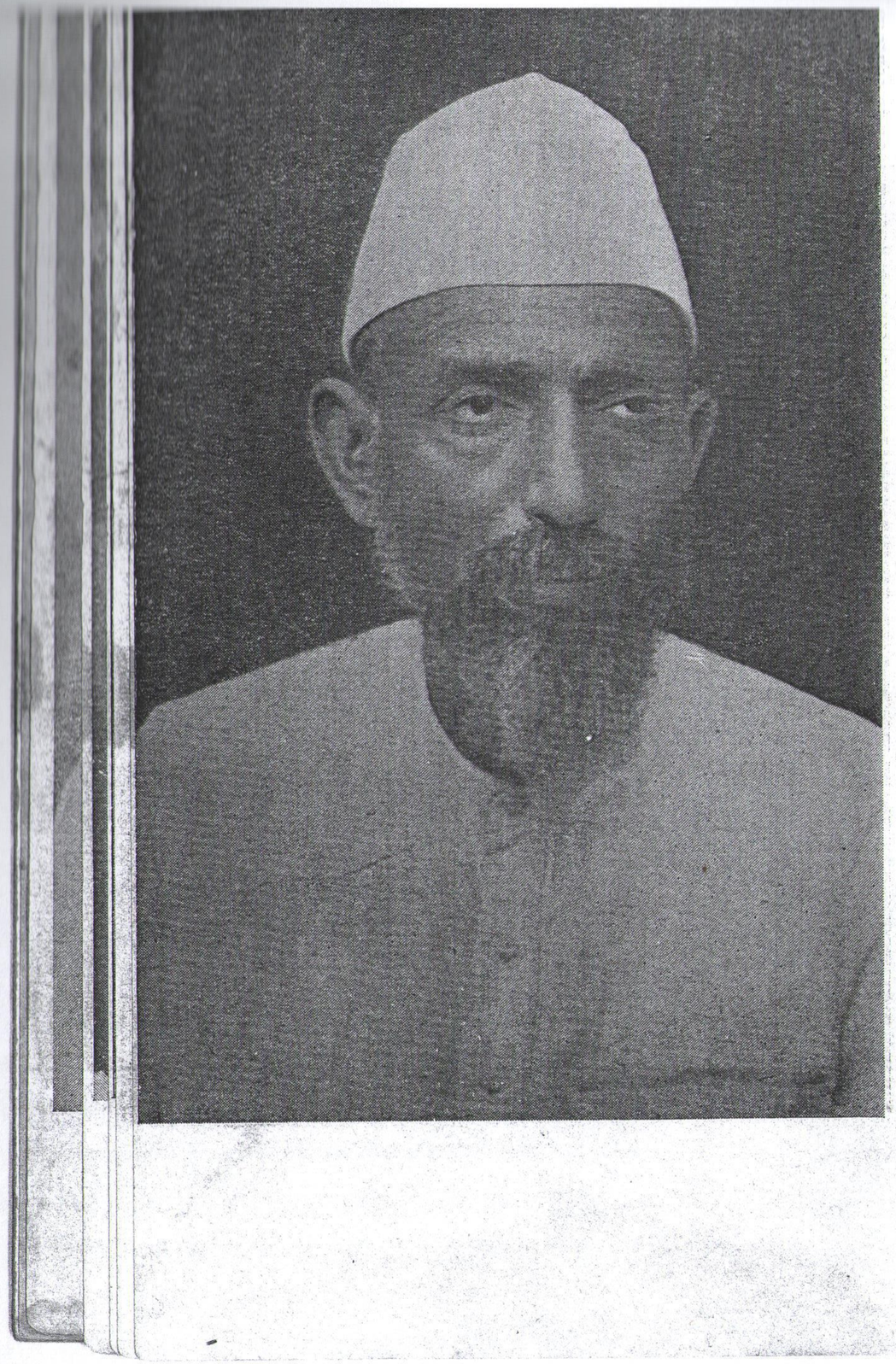

क्रान्ति और शान्ति के स्वप्न द्रष्टा

⊙ राष्ट्रीय जागृति मातृभाषा के प्रचार के बिना नहीं हो सकती। मातृभाषा के द्वारा कला-कौशल और साहित्य को पुनर्जीवित करना देश के शुभचिन्तकों का प्रधान कर्तव्य है। यदि हमें संसार में जीवित रहना है, यदि हमें अपनी पूर्व कीर्तियों की लाज रखनी है तो परमावश्यक है कि सबसे प्रथम हम अपनी मातृभाषा की उन्नति में संलग्न हों, उसे अपना सर्वस्व जानें और संसार में सर्वप्रिय वस्तु मानें और उसके उद्धार के लिए कटिबद्ध रहें।●●●

बौद्धिक-दार्शनिक

⊙ मेरी मान्यता है कि हमारा देश बौद्धिक रहा है। मैं इस पर बल देता हूँ। बहुत से अंग्रेज इतिहासकारों ने कहा है कि हमारे यहाँ परिपाटी के पूजने वाले बहुत हैं। कंजर्वेटिज्म बहुत है। इसमें आंशिक सत्य है। पूरा सत्य नहीं है। हमारा देश अपने आन्तरिक तल में बौद्धिक रहा है, बुद्धि का पुजारी रहा है। बुद्धि के ऊपर उसने किसी किताब को नहीं रखा है—"ये बुद्धेःपरतस्तुसः।" बुद्धि के ऊपर केवल ईश्वर को माना है। ईश्वर के बाद संसार में बुद्धि ही तत्त्व है। मैं बुद्धिवादी हूँ। बुद्धि के ऊपर सब पुस्तकों को, ट्रेडिशन्स को नापने-तोलने के लिए तैयार हूँ।●●●

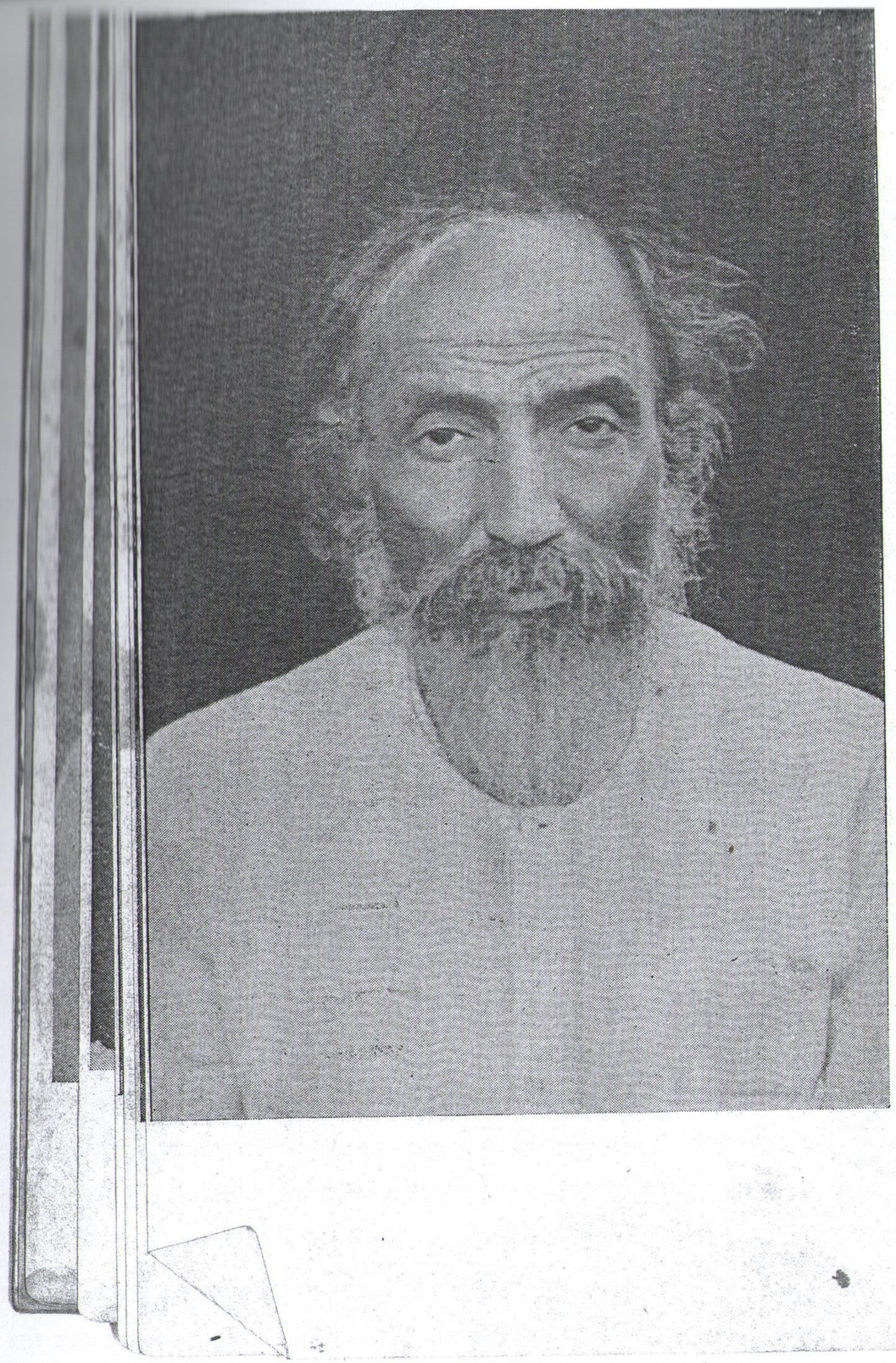

विश्वव्यापी हिन्दी-प्रचार के प्रेरणा पुरुष

⊙ मैं चाहता हूँ कि आज परराष्ट्र में हमारे दूत मौजूद हैं उनके सामने अपनी राष्ट्रभाषा और लिपि के गौरव की बात रखी जाय, मेरा तो विश्वास है कि भले ही आज यह चीज़ सम्भव न हो, लेकिन कुछ वर्षों बाद संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को एक भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त होगी। आज वहाँ पर पाँच भाषाओं को मान्यता दी गई है; लेकिन वह दिन दूर नहीं है, जब हिन्दी को वहाँ पर माना जायगा और वह दिन हमारे लिए गौरव का दिन होगा। हिन्दी को वहाँ पर मनवाना होगा। ●●●

[संसद के भाषण से]

भारतीय-संस्कृति के उद्गाता

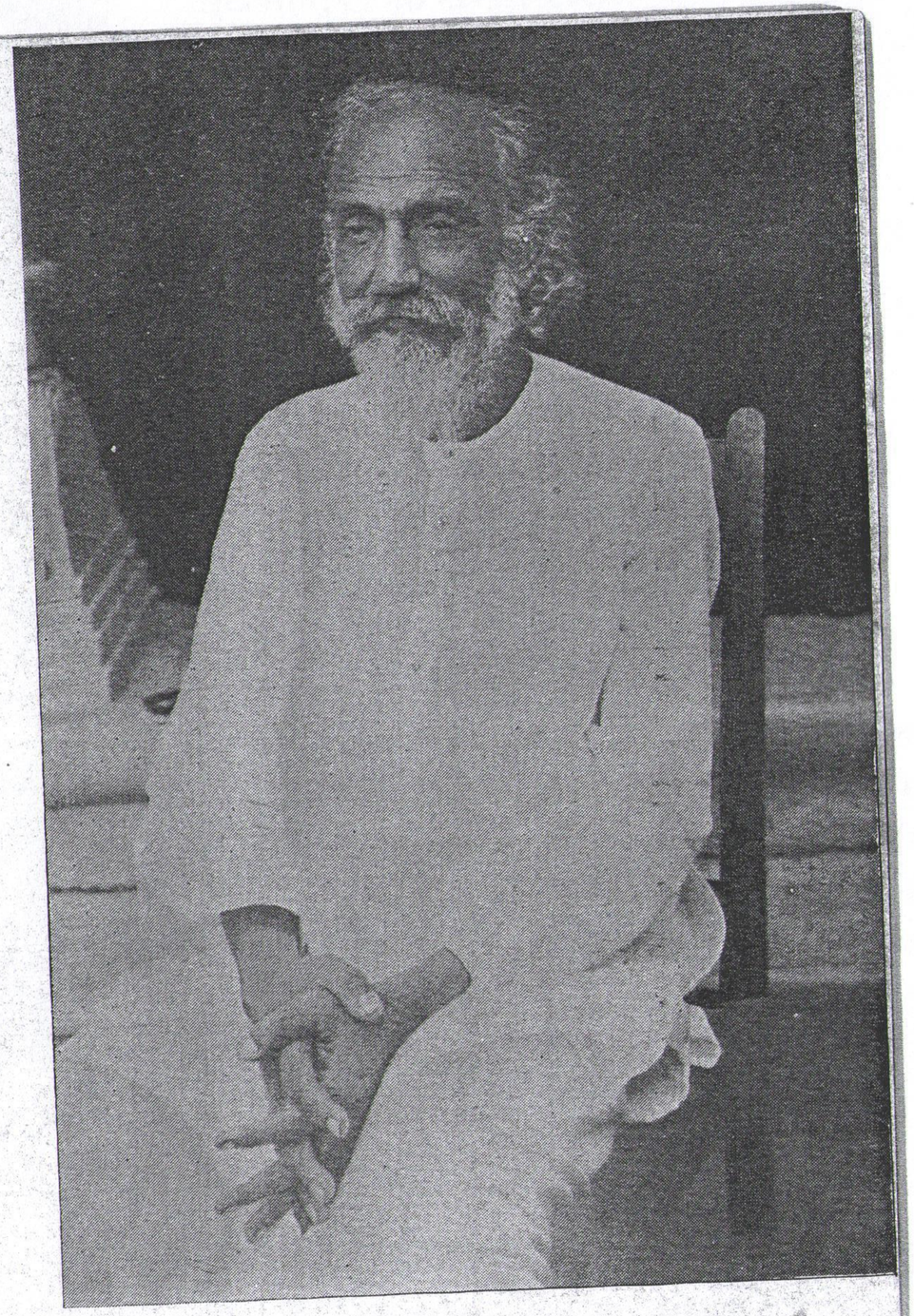

⊙ कुछ काँच पहचानने वाले समालोचक हिन्दी भाषा में साहित्य की कमी देखते हैं। गाँव का रहने वाला, जिसने गाँव की दुकान में रंग-विरंग के काँच के टुकड़े देखे हैं, नगर में जा कर जब एक बड़े जौहरी की दुकान में जाता है तो अपने गाँव के समान रंगीले काँचों को न देख कर बहुमूल्य मणियों का तिरस्कार करता है और कहता है हमारे गाँव के समान यहाँ मणियाँ तो हैं ही नहीं। ठीक यही दशा इन समालोचकों की भी है। यदि मणि की परख न हो तो दोष मणि का नहीं, परखने वाले का है। ●●●

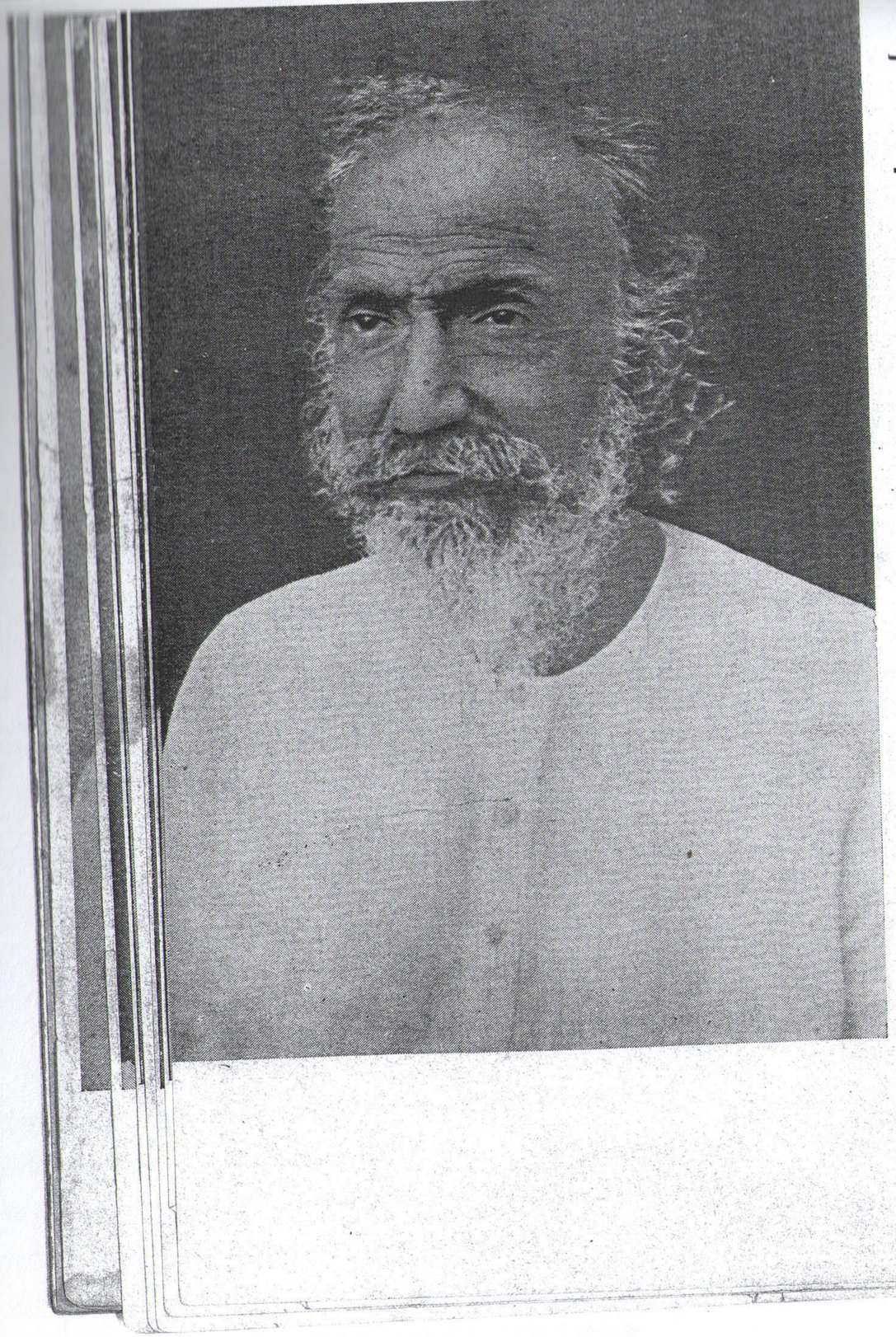

देवनागरी के वैतालिक

⊙ जब आपने भाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार किया है तब उसके अंकों को भी स्वीकार कीजिए। मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि इस विषय पर विचार कीजिए कि क्या हिन्दी पर अंग्रेजी अंक लादने का यह उपयुक्त समय है, जब कि देश इस विषय में किन्हीं विचारों से तैयार नहीं है। मैंने अनेक बार कहा है कि मैं हिन्दी को किसी प्रान्त पर लादूंगा नहीं, परन्तु आप विधान द्वारा इस लिपि को समस्त राजकीय कार्यों के लिए उन सब पर प्रायः लादे जा रहे हैं, जो नागरी लिपि द्वारा अपना कार्य करते हैं। मैं आप से कहता हूँ आप अपना हाथ वहीं रोक लें।●●●

[संसद के भाषण से]

भारतीय भाषाओं के पक्षधर

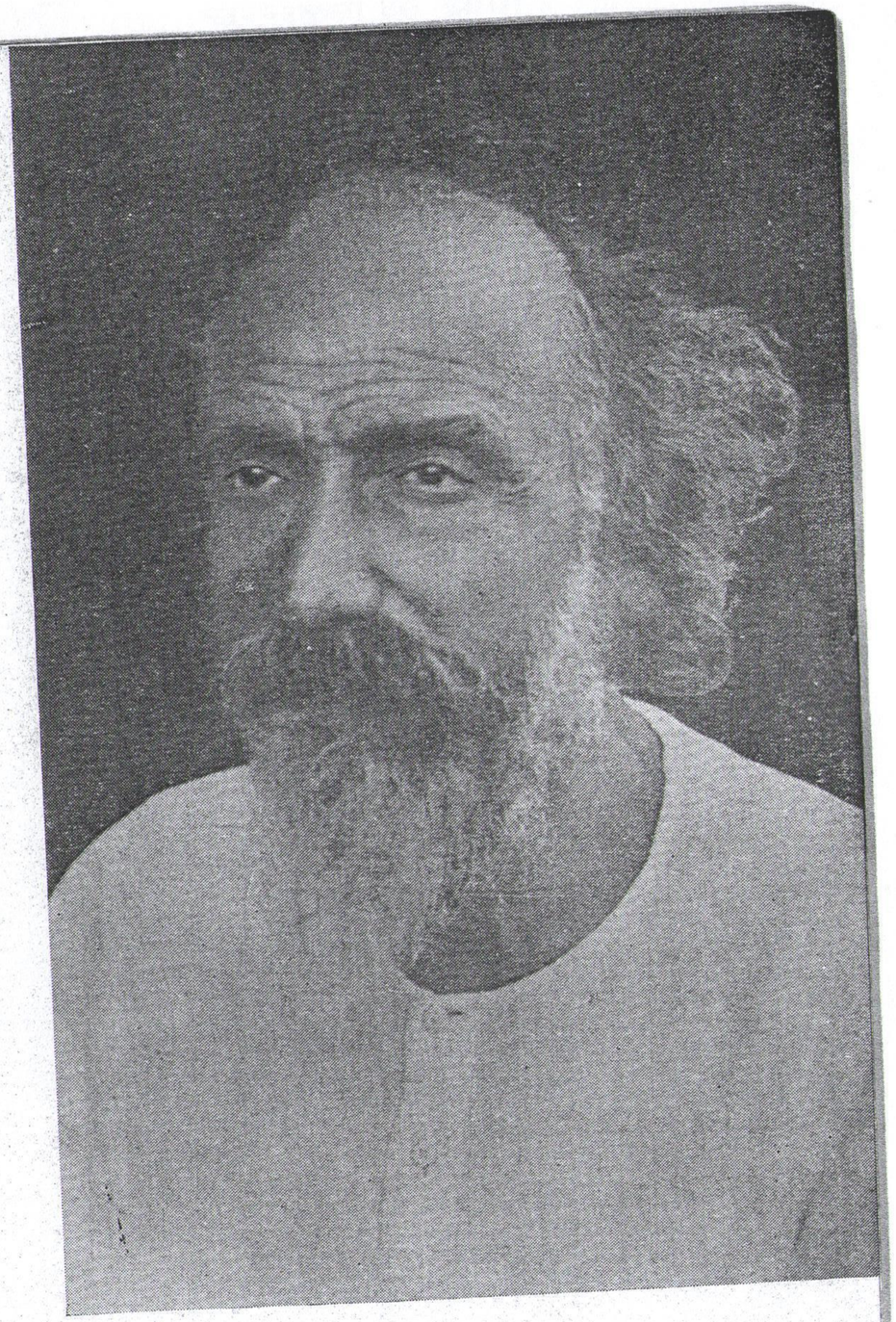

⊙ संस्कृत, प्राकृत और हिन्दी के पारस्परिक सम्बन्धों को स्थिर करने में भाषा के विकास क्रम पर ध्यान देना आवश्यक है। इस संसार में जीवन और मृत्यु का कार्य कारण सम्बन्ध है। जीवन मृत्यु के सहारे ही जीवित है। यही सिद्धान्त जीवित भाषाओं के सम्बन्ध में भी लगता है।...मृत्यु और जीवन जहाँ बराबर है, वहीं वास्तविक जीवन है। जब तक भाषा के रूपों का नाश बराबर होता रहता है, तब तक उसका विकास भी चलता रहता है।●●●

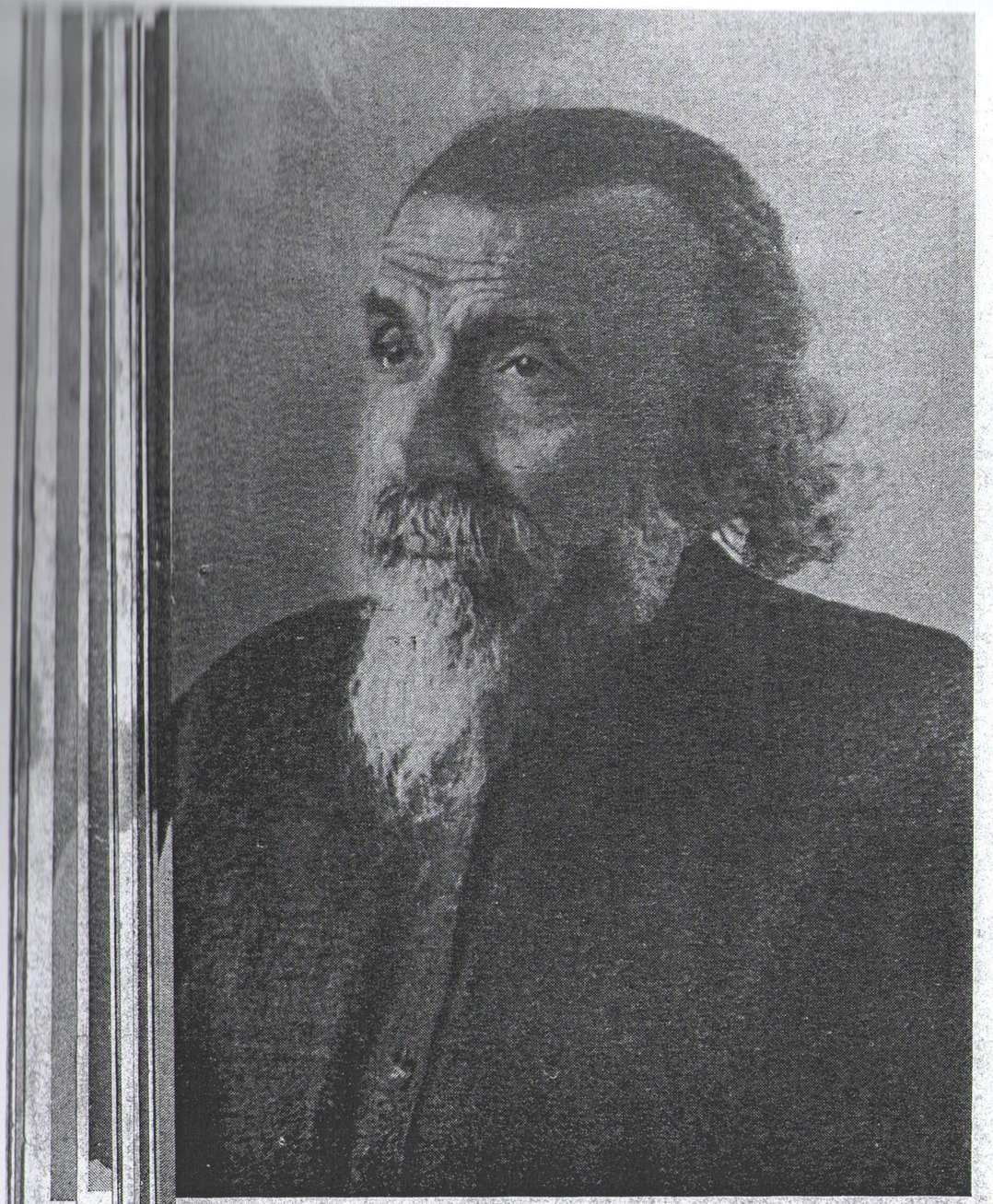

सम्मेलन के प्राण

⊙ मैंने सदा ही माना है कि हिन्दी ही हमारे देश को एक सूत्र में बाँध सकती है। मैं जानता हूँ कि हमारे भाई अंग्रेजी के पक्षपाती हैं और ऐसे दस बीस और भी हैं; जिनका ऐसा विचार है। लेकिन अंग्रेजी से हमारा देश एक सूत्र में बँध सके, यह बिल्कुल गलत है, असम्भव है। उसको बाँधने के लिए हमें देश की ही भाषा रखनी होगी। आज उसका विवाद नहीं है। वह हमारा संविधान निश्चित कर चुका है।●●●

[संसद के भाषण से]

राष्ट्रवाणी के उद्घोषक

⊙ वाणी की सार्थकता इसी में है कि वह आकाश में सीढ़ी बाँध कर मनुष्य को उस स्थान पर चढ़ा दे जहाँ से ही वाणी का उद्भव हुआ है। यदि वाणी ने मनुष्य को लुभा कर नीचे कीच में घसीट कर डाल दिया तो उसका सौन्दर्य कुलटा का सौन्दर्य है जो भोग-लिप्सुओं के मन को क्षण भर के लिए भले लुभा ले, किन्तु जो उच्च पुरुषों के सामने आदर नहीं पाती।●●●

[हिन्दी साहित्य कानन से]

समन्वय की प्रेरक मूर्ति

⊙ मैं उन सब गुणों अथवा अच्छाईयों को ग्रहण करने के पक्ष में हूँ जो पश्चिम हमें
सिखा सकता है। परन्तु मैं यहाँ समुपस्थित सभी सज्जनों से यह निवेदन कर
देना चाहता हूँ कि वे इस बात को स्मरण रखें कि पश्चिम में चमकने वाली सभ
वस्तुएँ सुवर्ण नहीं हैं। केवल पश्चिमी होने के नाते कोई वस्तु गुणप्रद न
हो जायगी। हमारे देश ने भी ऐसी उच्चकोटि की विचारशील संस्कृति
जन्म दिया है जो समय की गति के साथ संभवतः सम्पूर्ण मानव-जाति के भाग
निर्माण पर अधिकाधिक प्रभाव डालेगी।●●●

[संसद के भाषण

भाषा-क्रान्ति के सूत्रधार

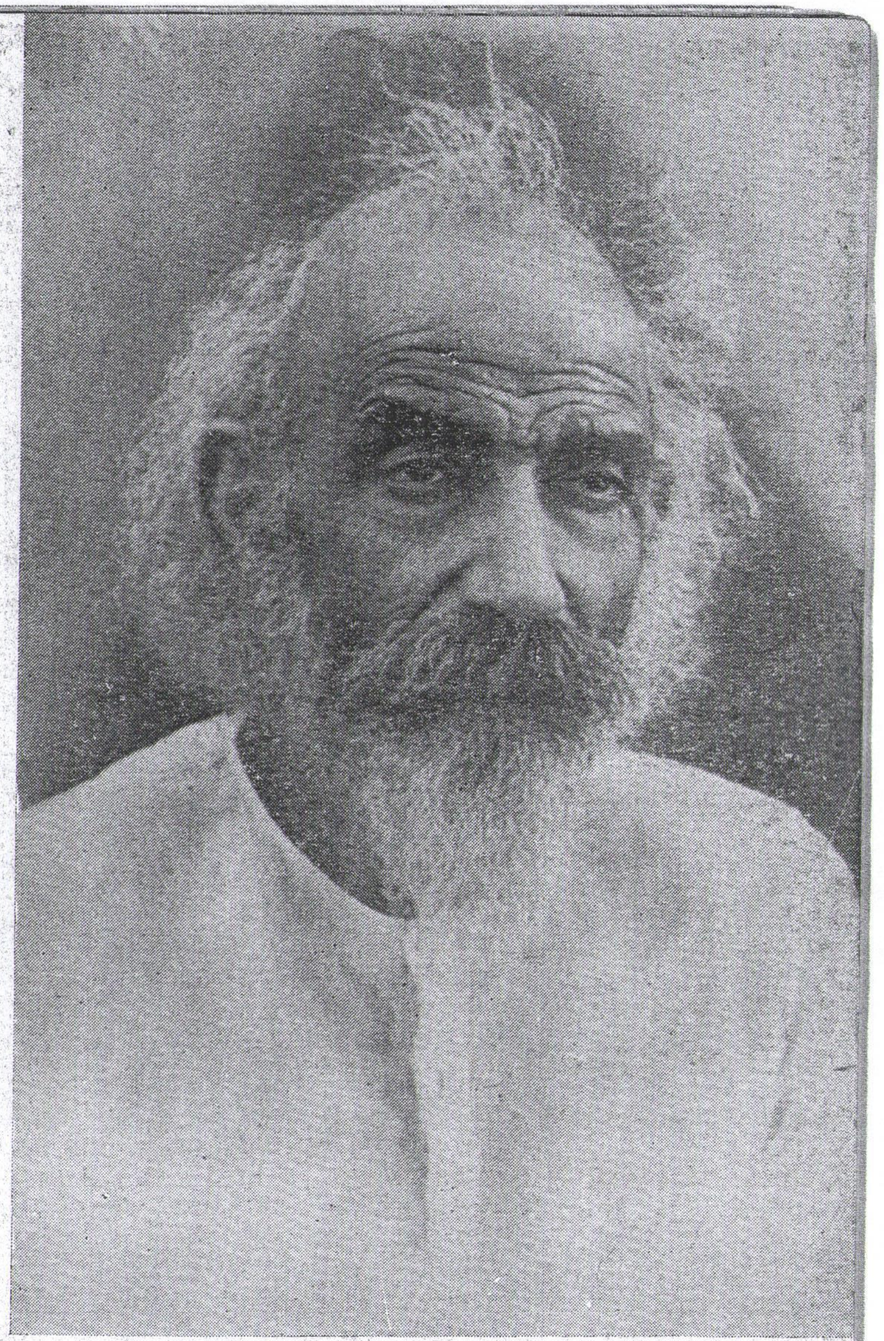

⊙ हर मुल्क और हर सभ्यता का उसकी भाषा से उतना ही गहरा तआल्लुक़ है जितना उसकी आब व हवा से। मुल्क की भाषा और साहित्य ही हर एक मुल्क की तरक्की की गवाह है। भाषा ही वह खोराक और हवा है, जिस पर देश के हर बच्चे की विचारशक्ति परवरिश पाती है। अगर उसके मुल्की काम किसी ऐसी ज़बान के ज़रिए से किए जावें, जिसको वह नहीं समझता तो ज़ाहिर है कि दिन-ब-दिन मुल्की मामलात की निस्बत उसकी कूवते फ़हम कम हो जावेगी।●●●

स्थितप्रज्ञ राजर्षि

⊙ मेरी अत्यधिक इच्छा यह है कि हमारी एक केन्द्रीय संस्कृति, भारतीय संस्कृति का फैलाव हो। मेरी यह दृष्टि नहीं है कि हमारे उत्तर प्रदेश की जो सीमा है उसे कुछ और बढ़ा लें। यदि उसमें से दो ज़िले दूसरे प्रदेश में जाते हैं तो मैं उसमें बाधक होने वाला नहीं हूँ। मैं इसका पोषक हूँ कि भारत की जो अपनी संस्कृति है, जिसको मैं भारतीय संस्कृति कहा करता हूँ, वह चारों ओर फैले; वह और भारत की एकता की भावना दिन प्रतिदिन देश में बढ़े।●●●

[संसद के भाषण से]

सत्य-निष्ठ स्वरूप

⊙ मेरी यह आशा अवश्य है कि यह जो अन्तर्राष्ट्रीय अंक के नाम से हमारे देश के संविधान पर कलंक है वह अवश्य हटेगा। इन अन्तर्राष्ट्रीय अंकों को मैं आज कलंक मानता हूँ। हमारे लिए लज्जा का विषय है कि हमारी भाषा में, नागरी में हमारे अपने सुन्दर अंक न रखे जाकर यह अन्तर्राष्ट्रीय अंक रखे गये हैं। इस कलंक से संविधान को भविष्य में ठीक करना होगा। मेरी आशा है कि आने वाली संतान हम लोगों से अधिक बुद्धिमान होगी और अधिक शक्तिवान होगी। वह इस कलंक को संविधान से निकालेगी।●●●

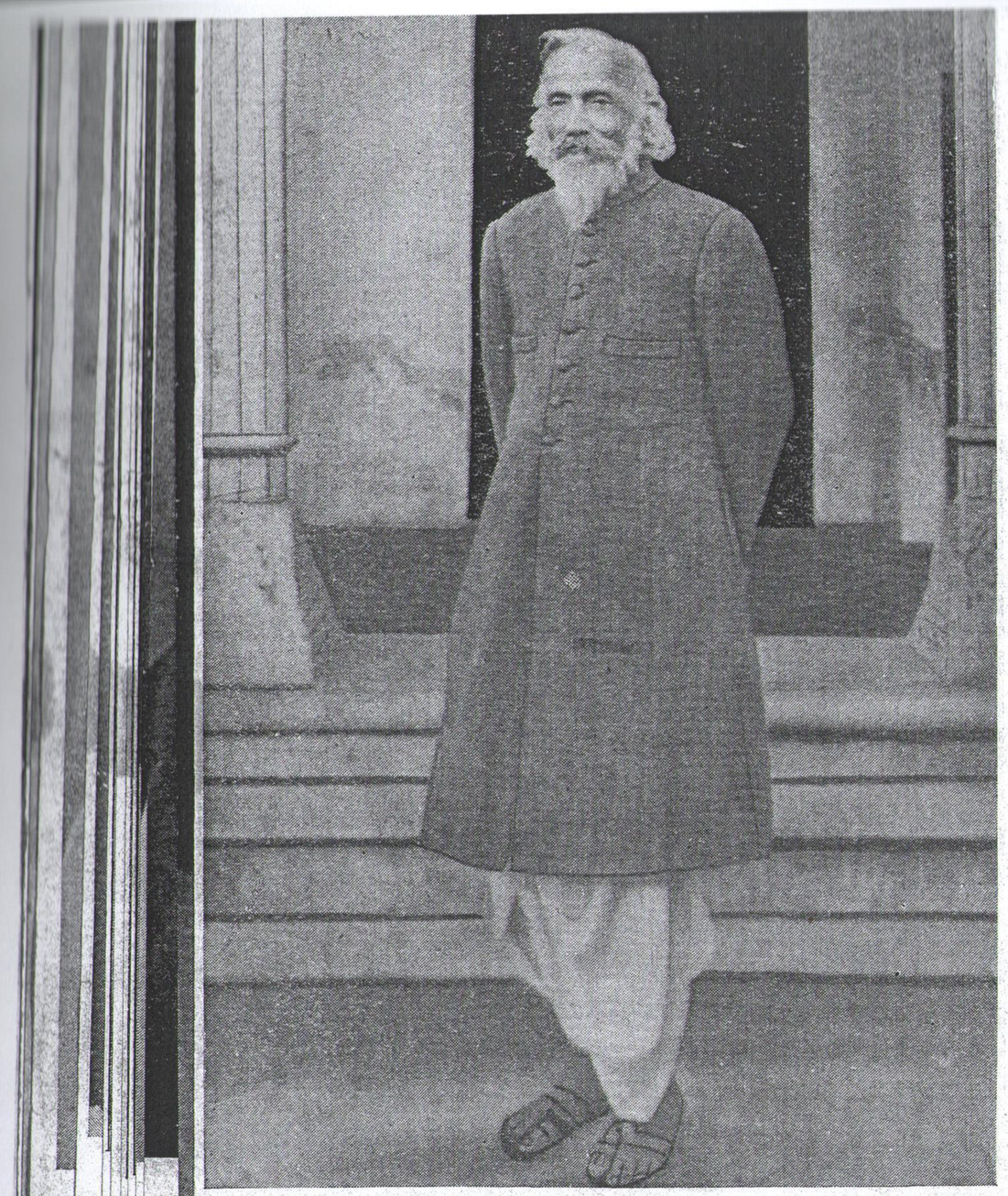

आदर्शोन्मुख समर्पित
पथिक

⊙ राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजी भाषा के द्वारा काम करना हानिकर है। अंग्रेजी में अपने घर का काम कर आप स्वयम् अपने मुँह से पुकारते हैं कि हम गुलाम हैं, हम गलाम हैं। इस तरह राष्ट्रीयता की आशा करना व्यर्थ है। राष्ट्रीयता के लिए ख़ाली प्रस्ताव पास करना नहीं है बल्कि उसके लिए हृदय में एक चिंघाड़ उठती है, एक प्रकार की जलन होती है कि जनता से उनके शब्दों में बात करें, उन तक अपना सन्देश पहुँचायें। ●●●

भारत-भारती के आराधक

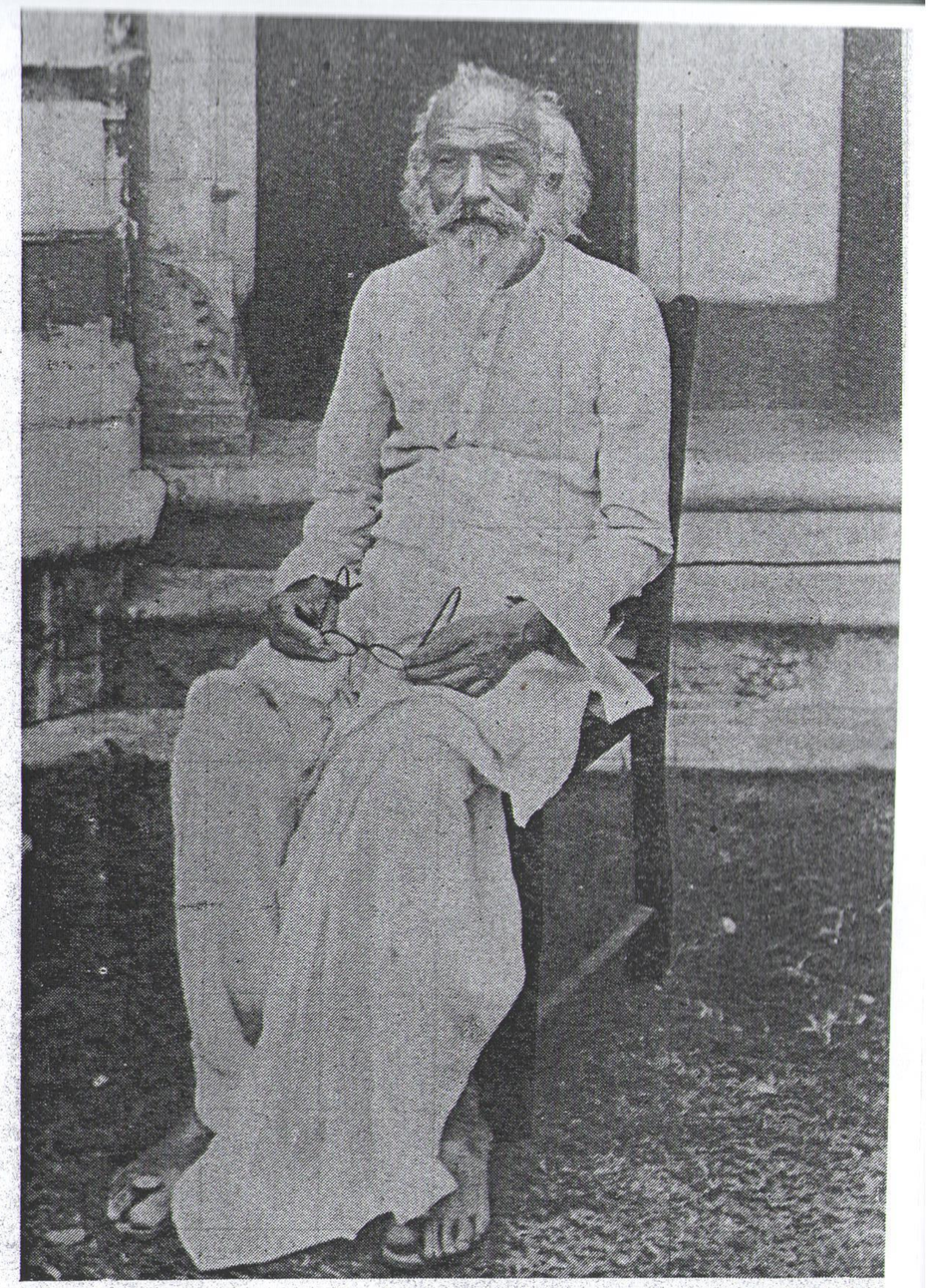

⊙ आजकल न सिर्फ़ सरकारी काम बल्कि हमारी कांग्रेस, सूबा और जिलों की कान्फ्रेंन्स और मुल्क में हर जगह तालीमयाफ्ता लोगों में अंग्रेजी ज़बान की हुकूमत नज़र आती है उससे दूसरे मुल्क का आदमी यही नतीजा निकालेगा कि हमारे रहनुमाओं का यह मक़सद है कि हमारे भविष्य स्वराज की ज़बान अंग्रेजी हो। लेकिन मुझको मालूम है कि हमारे मुल्क के ज्यादातर क़ाबिल लोगों की राय यह हरगिज़ नहीं है कि हमारी मुल्की ज़बान अंग्रेजी हो या हो सकती है।●●●

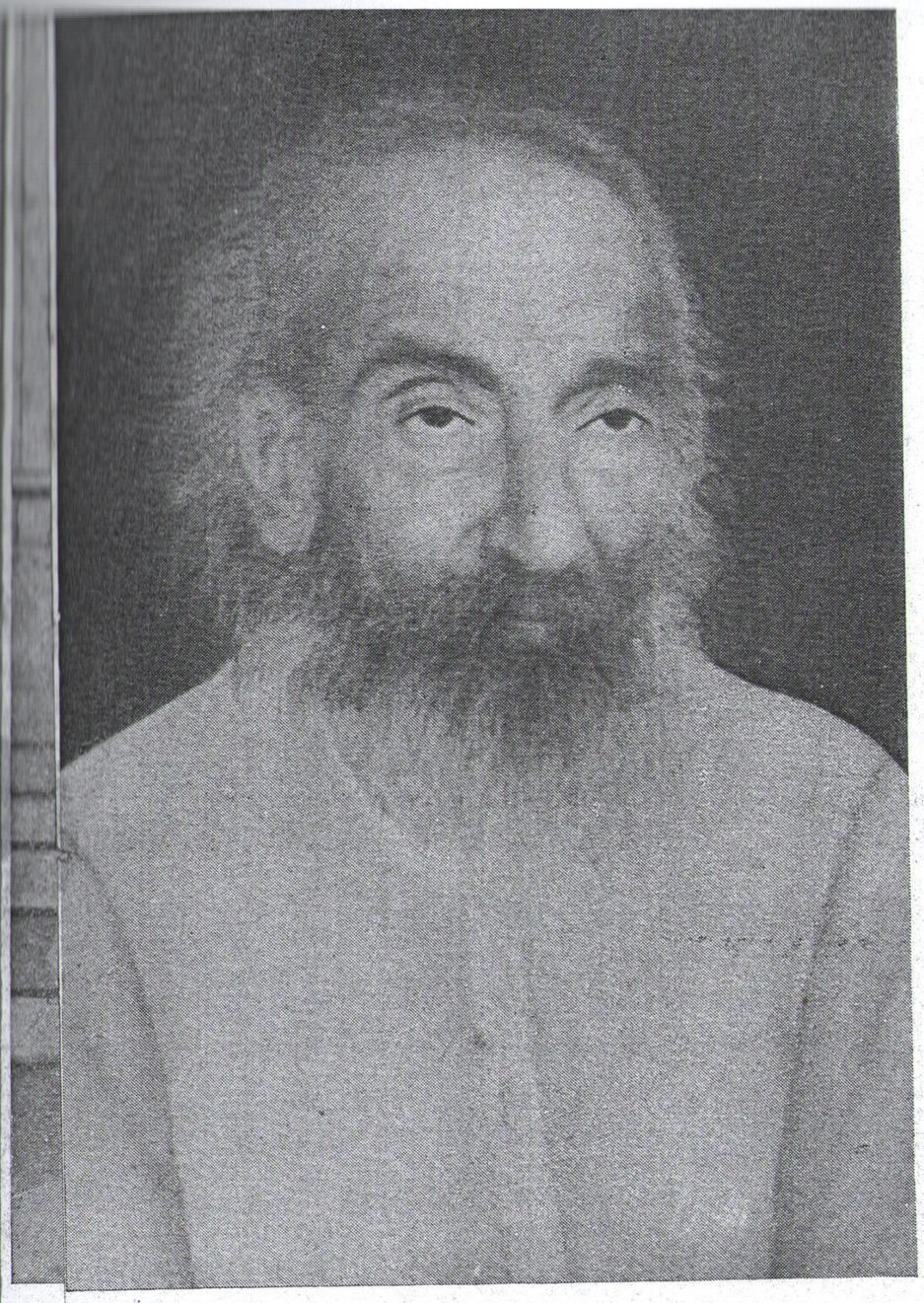

संत-परंपरा के प्रतीक

⊙ मानसिक स्वतंत्रता और स्वाधीन विचार की आवश्यकता बाह्य स्वतंत्रता से कहीं अधिक आवश्यक है। अपने प्राचीन इतिहास को अपना कर, अपनी मातृभाषा का प्रचार कर अपने जातीय चाल, ढाल, व्यवहार, सदाचार को जीवित रखना राष्ट्रीय अस्तित्व के लिए अनिवार्य है।●●●

दूर दृष्टि : भावी स्वप्न

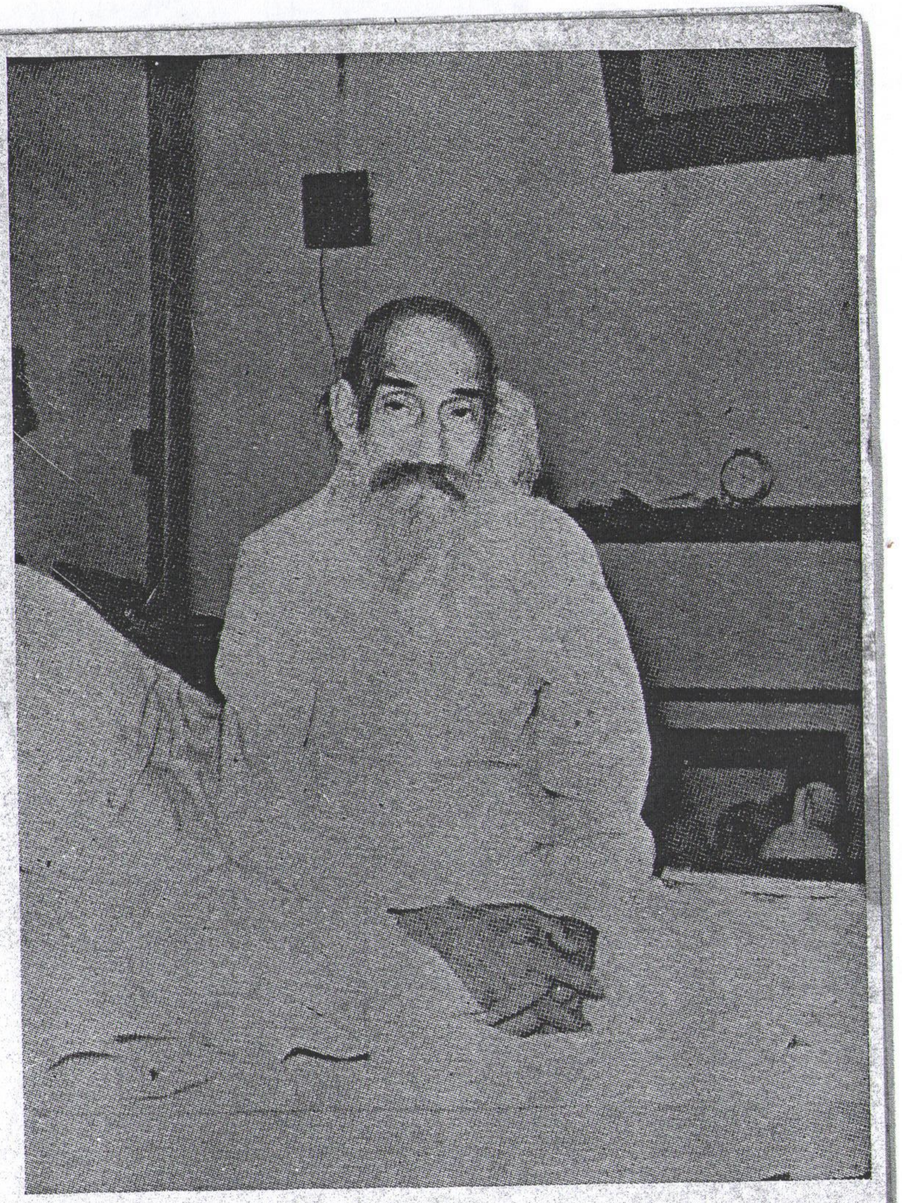

⊙ पुरुषोत्तमदास टण्डन मेरे पुराने साथी हैं। हम वर्षों तक साथ काम करते रहे हैं। मेरे जैसे वह ईश्वर के भक्त हैं।●●●

—महात्मा गांधी

⊙ सम्मेलन मेरे प्राणों में समा गया है।●●●

—राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन

एक अकेली आवाज़

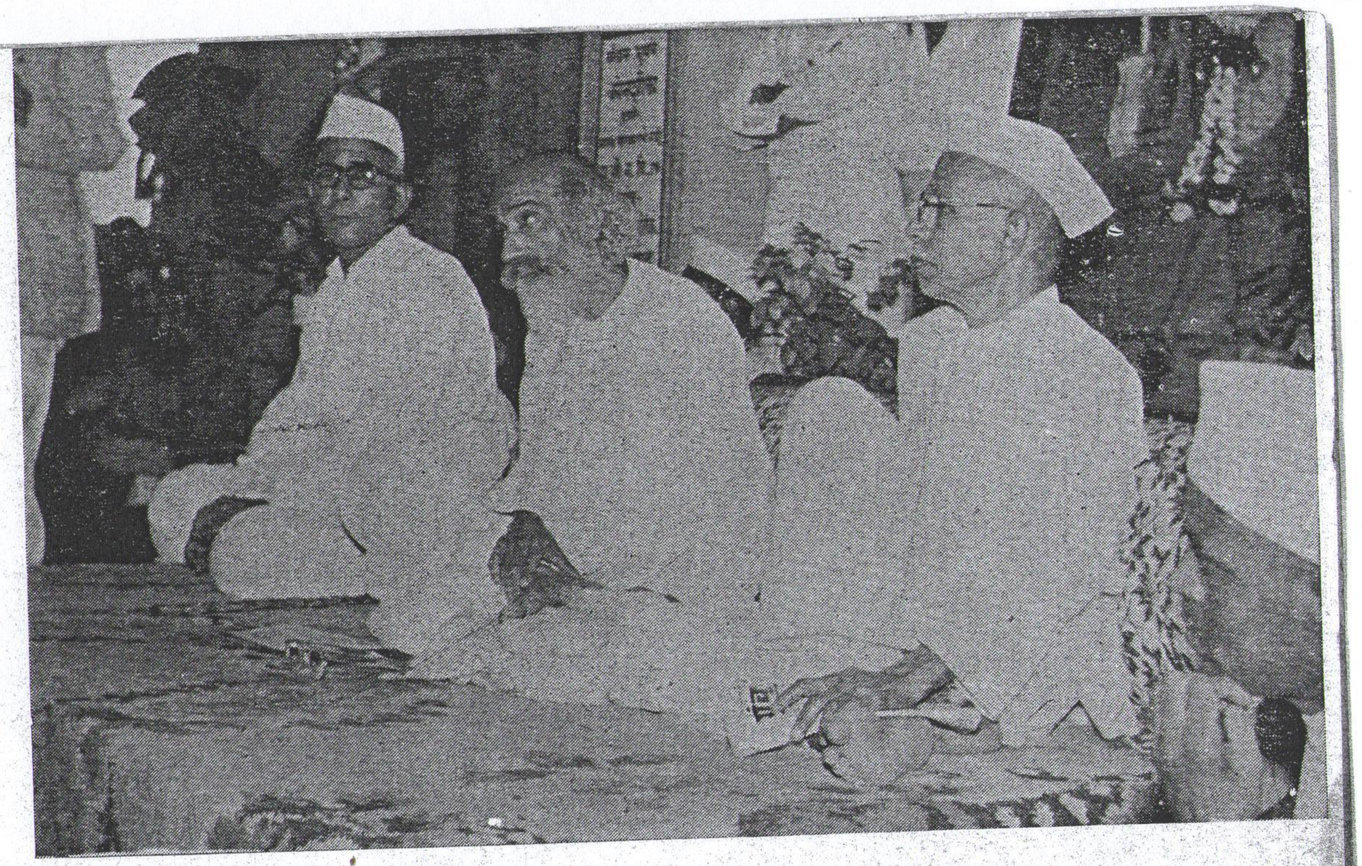

⊙ टण्डन जी हम सब से बड़े बुज़ुर्ग हैं। उस ज़माने की तस्वीर देखना है तो टण्डन जी को देखिए जो अटल खम्भे की तरह आज भी अपने सिद्धान्त के पक्के हैं। हममें से कुछ लोग बह गए लेकिन वह डटे रहे। उनके रहने के ढंग और आदत में कोई फ़र्क़ नहीं है भले ही उम्र का फ़र्क़ हो गया हो। एक आदमी का ख़ास बातों में जमा रहना इस बात की याद दिलाता है कि उसके पीछे सिद्धान्त है।●●●

—पं० जवाहरलाल नेहरू

⊙ अगर टण्डन जी कभी हिन्दी-उर्दू के झगड़ों में फँस जाते तो सम्मेलन का जहाज बे-पतवार का होकर तूफान में उलट जाता और कभी का छिन्न-भिन्न हो जाता। किन्तु उनकी हिन्दी-भक्ति उनको मुस्लिमों का द्वेष या उर्दू का भय नहीं सिखाती। वह खूब तपे-तपाए शुद्ध सोने की तरह कांग्रेसनिष्ठ हैं, सच्चे राष्ट्रीय हैं और पूर्ण स्वराज्य-भक्त हैं। उनकी सम्मेलन-सेवा स्वराज्य-सेवा का ही एक महत्त्व का अंग है। उनकी साहित्यिक अभिरुचि उनकी उच्च संस्कारिता और जीवन-समृद्धि से ही फलित हुई है। श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन जैसा सेवक जिस भाषा को मिला है, उस भाषा का भाग्योदय निश्चित ही है।●●●

—काका कालेलकर

हिन्दी के समर्थ नायक

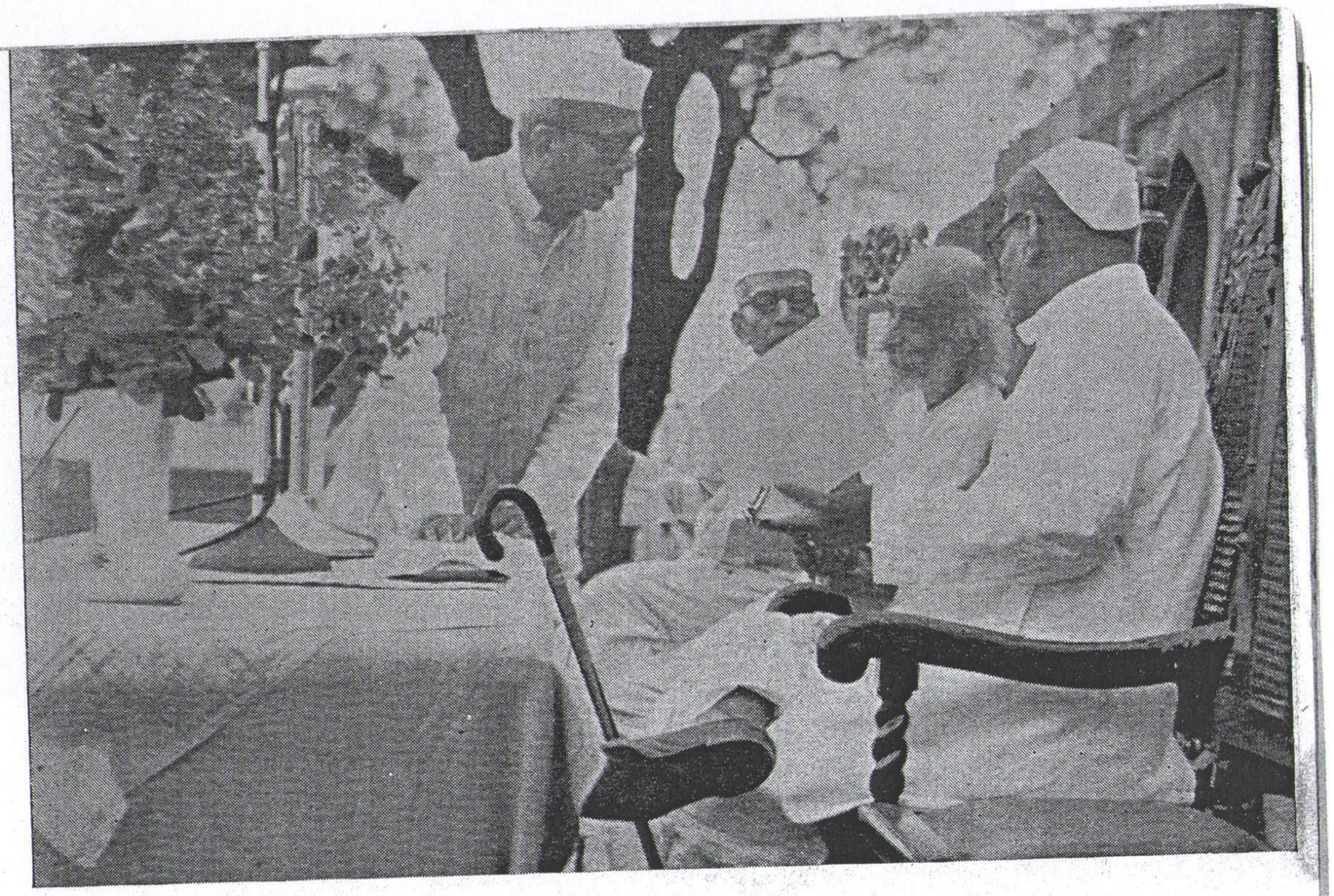

⊙ गांधी युग में भारतीय क्षितिज पर जो अनेक नेता प्रकट हुए उनमें श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन अपनी निराली कान्ति से दीप्तमान हैं और जब उनके विचार नवीनतम फ़ैशन से मेल नहीं खाते तो वह शाब्दिक हेर-फेर नहीं करते, स्पष्टवादिता से काम लेते हैं।...उनका व्यक्तित्व प्राचीन भारतीय संस्कृति की उस ओजस्विता का प्रतीक है जिसमें हर नये ज्ञान को अपनी अजस्र ज्ञानधारा में समो लेने और उनके परस्पर समन्वय का प्रयास किया है। मैं भारतीय संस्कृति के इस जीवित प्रतीक को अपनी आदरपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।●●●

—अनन्तशयनम् अय्यंगार

राजर्षि और पूर्व राष्ट्रपति

⊙ टण्डन जी का व्यक्तित्व इतना बड़ा है कि वह राजनीति और साहित्य की परिधि में नहीं समा सकता, सामाजिक जीवन के जिस पहलू से भी उनका सम्बन्ध रहा है ; उसे उन्होंने समृद्ध किया है। सार्वजनिक जीवन में पदार्पण करने के बाद टण्डन जी जिन सिद्धान्तों का अनुगमन करते रहे हैं, उनमें से अधिकांश आज भी आदर्श रूप में सर्वमान्य हैं। उनके नेतृत्व में सदा सत्य, सदाचरण और नैतिकता के पक्ष को समर्थन मिला है।

—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

स्वतंत्रता-संग्राम के निर्भय सेनानी

⊙ वह स्वतंत्रता-संग्राम के निर्भय सेनानी और हमारी संस्कृति के मूलभूत मूल्यों में विश्वास रखने वाले रहे हैं।●●●

—सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

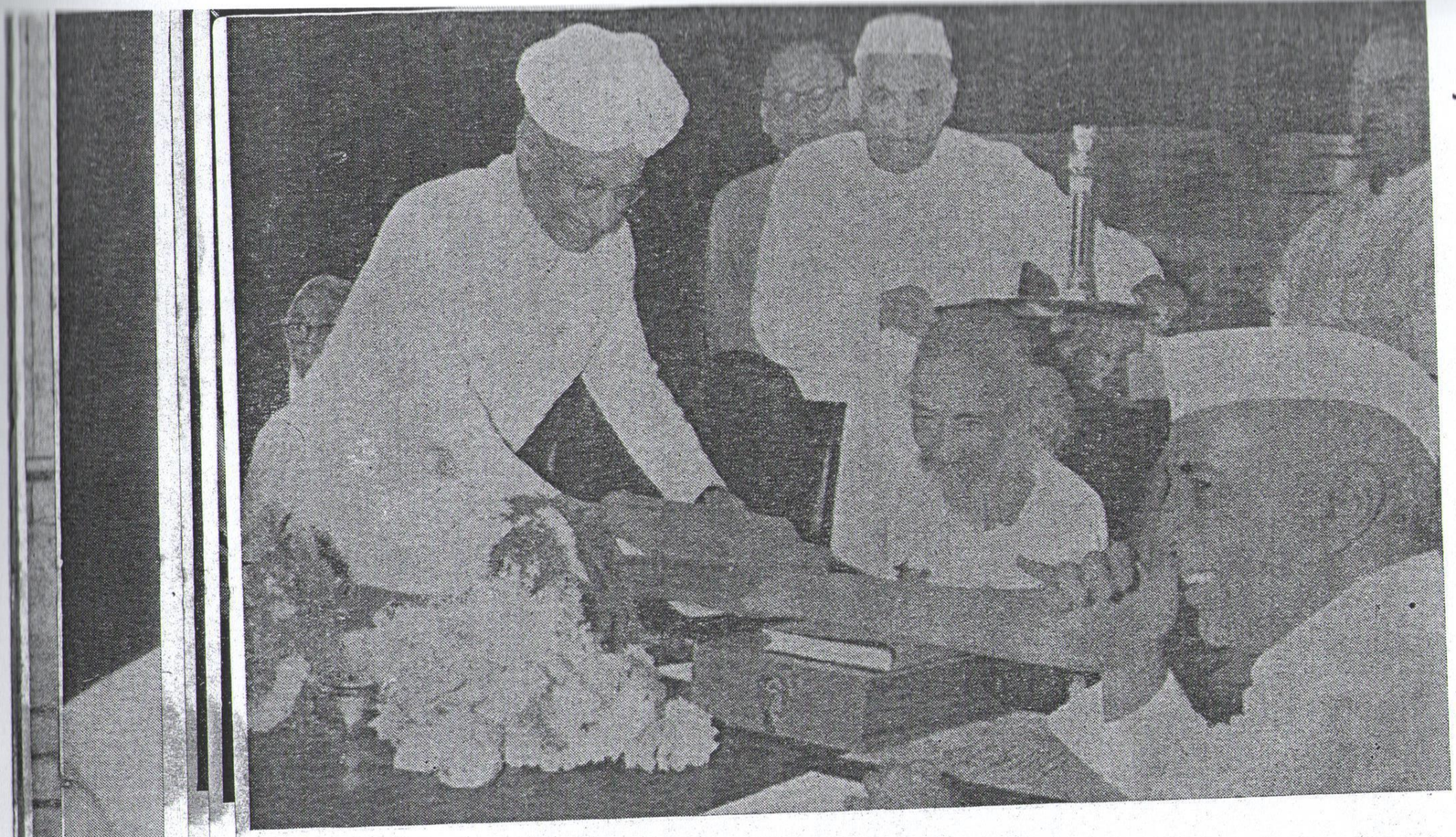

महापुरुषों की सन्निधि

⊙ टण्डन जी देश के उन थोड़े लोगों में हैं जिनका जीवन एक नहीं अनेक रूपों में असाधारण रहा है। राजनीतिक क्षेत्र में उन्होंने लगभग पचास वर्ष लगाये परन्तु कभी उन्होंने अपना क़दम पीछे नहीं हटाया। कहा जाता है कि आयु बढ़ने पर राजनीतिक क्षेत्र में काम करने वालों की उग्रता कुछ कम हो जाती है; परन्तु टण्डन जी के विचार सदा प्रगतिशील बने रहे। राजनीतिक आँधियों में टण्डन जी कभी डगमगाये नहीं। अपने विचारों को वह निडर होकर प्रकट करते। उनमें बड़ा साहस है और अटूट दृढ़ता। राष्ट्र के महान प्रश्नों पर वह स्वतंत्र रूप से सोचते हैं और जब कभी ऐसी परिस्थिति आई, उन्होंने अपनी आवाज़ उठाई, चाहे वह अकेली ही आवाज़ क्यों न हो। ऐसे व्यक्ति कम ही होते हैं परन्तु ऐसे महानुभावों की देश को सदा आवश्यकता होती है।●●

—लालबहादुर शास्त्री

श्रद्धांजलि-समर्पण

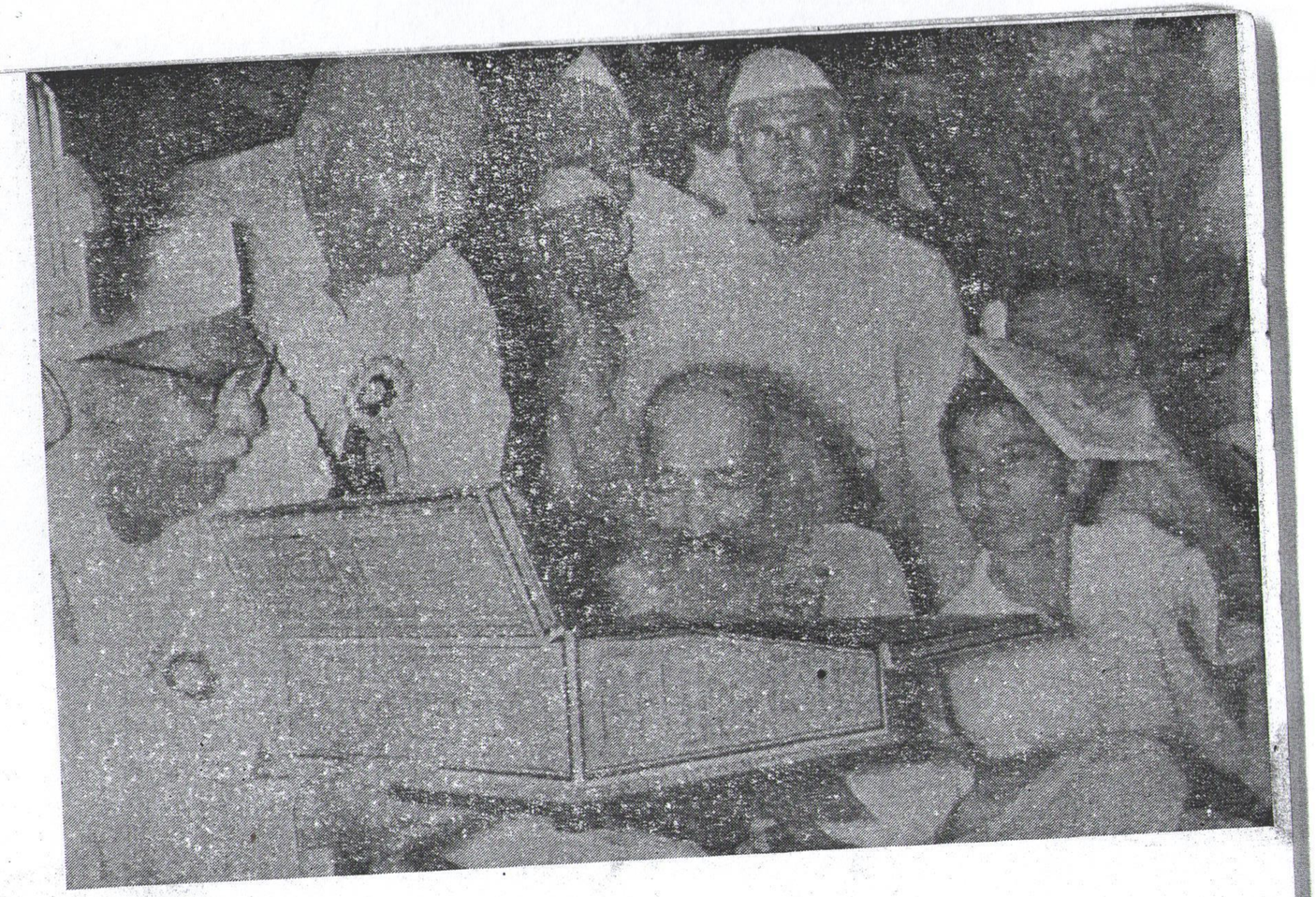

⊙ हमारे राजनीतिक नेताओं में जो लोग त्यागमूर्ति कहे जाने के अधिकारी हैं उनमें टण्डन जी का नाम निश्चय ही प्रथम श्रेणी में लिखा जायगा। उनका त्याग जिस उत्कृष्ट कोटि का था और अपनी त्यागवृत्ति से जिस प्रकार उन्होंने अपने कुटुम्बियों को संयम की दृढ़ शृंखला में बांधा वह चिरस्मरणीय कथा है। उसको सोच कर द्रोणाचार्य की याद आती है जिन्होंने राजगुरु होते हुए अपने एक मात्र पुत्र को दूध पीने तक का अवसर नहीं दिया क्योंकि इससे त्याग में बट्टा लगता और राजा के सामने हाथ फैलाना पड़ता। यों अजातशत्रु तो स्यात् कोई नहीं होता फिर भी मैं समझता हूँ टण्डन जी का स्यात् ही कोई शत्रु होगा, परन्तु यदि कोई हो तो उसको भी टण्डन जी के त्यागमय जीवन के सामने नतमस्तक होना पड़ेगा।●●●

—डा० सम्पूर्णानन्द

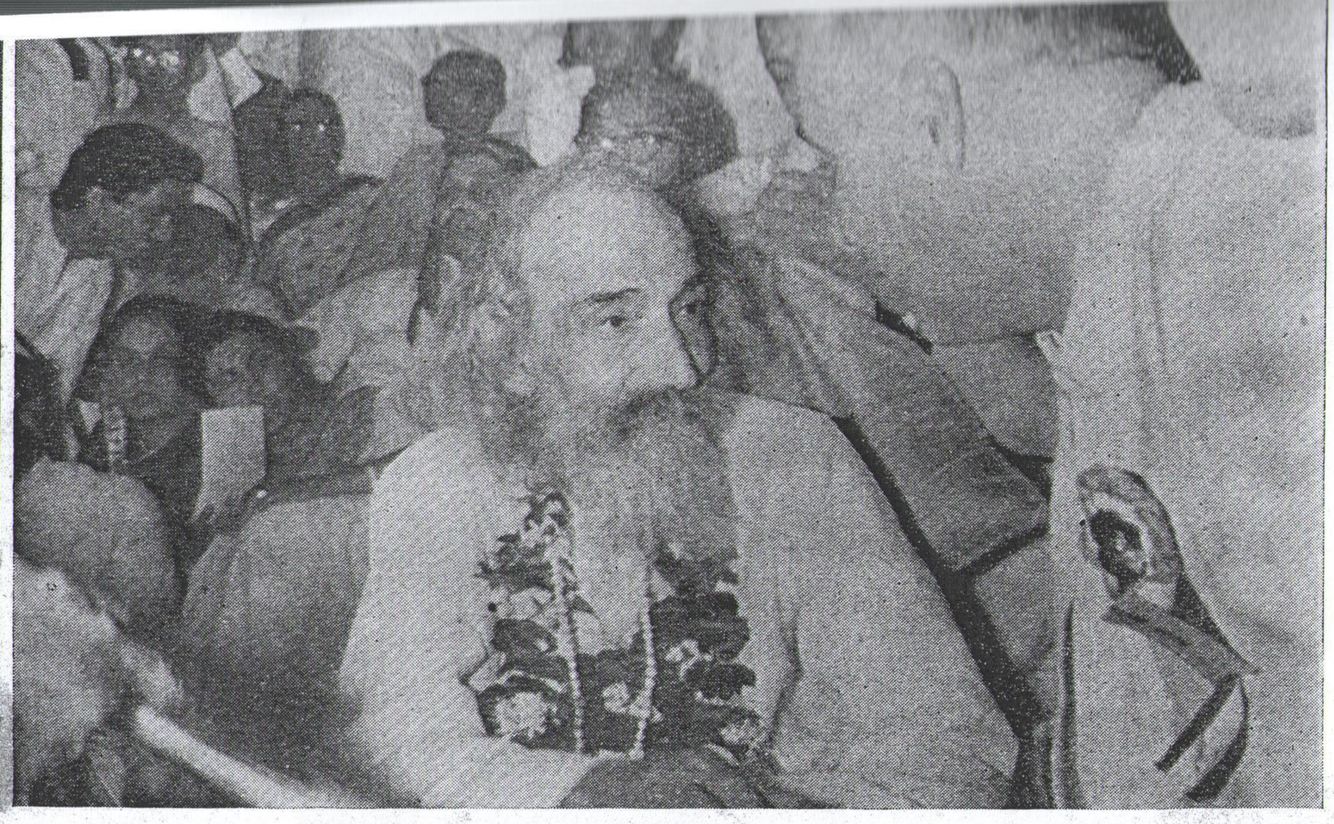

⊙ हमारे ज़माने के ज्यादा लोग तो अब रहे नहीं, टण्डन जी से हमारा जो रिश्ता बना वह साथियों का-सा था, मिल कर काम करते थे जेल में और बाहर भी।●●●

—पं० जवाहरलाल नेहरू

अभिनन्दनीय व्यक्तित्व

⊙ त्याग और मनस्विता, आदर्श चिन्तन और कर्ममय जीवन औदार्य और सत्य पर दृढ़ रहने का आग्रह, प्रेम पेशल हृदय और निर्भय कर्तव्य निष्ठा, सब के प्रति आदर भाव और यथा प्रयोजन कस कर विरोध करने की क्षमता, अपरिग्रही स्वभाव और निरन्तर दान निष्ठा, विनम्रता और सैद्धान्तिक अकड़ एक साथ नहीं रह पाते। जहाँ रहते हैं वहाँ पूर्ण मनुष्यत्व विराजता है। टण्डन जी के व्यक्तित्व में इनका अद्भत मिलन हुआ है। इन दुर्लभ गुणों ने उन्हें एक ओर जहाँ असामान्य व्यक्तित्व सम्पन्न मनुष्य बनाया है वहीं गलत-फ़हमी के लिए द्वार भी खोल दिया है।●●●

—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

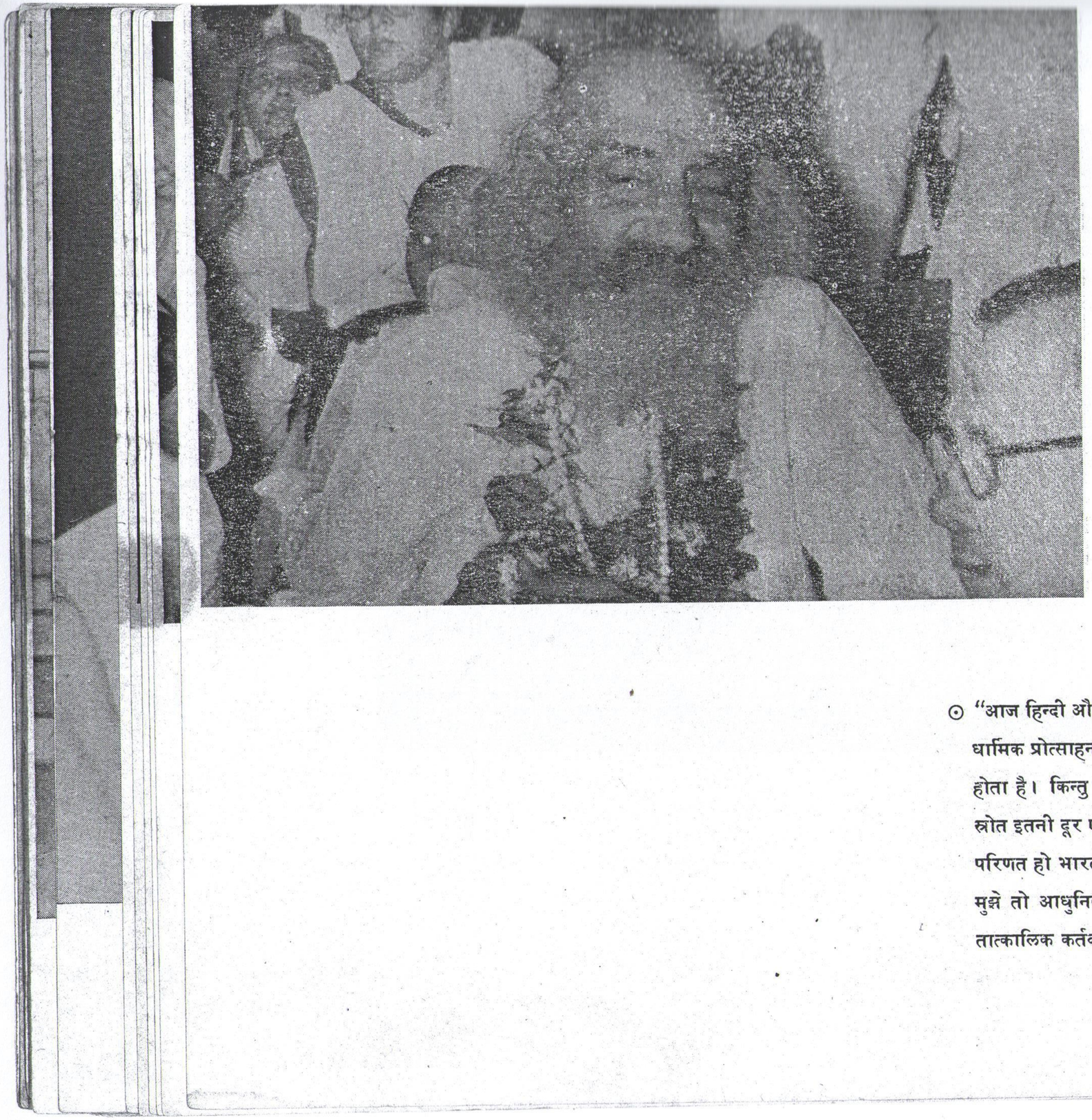

रामराज्य के आवाहक

⊙ "आज हिन्दी और उर्दू दो भिन्न सभ्यता की सूचक भाषाएँ बन गई हैं। उनक धार्मिक प्रोत्साहन भी भिन्न उपमाओं और रूपकों और भिन्न दिव्य पुरुषों द्वार होता है। किन्तु वास्तव में भाषा का आधार एक ही है और अभी यह दोनं स्रोत इतनी दूर एक दूसरे से नहीं हुए हैं कि फिर मिल कर एक प्रबल धारा ं परिणत हो भारतवर्ष भर को अपनी शक्ति से उर्वरा कर सुसज्जित न कर दें मुझे तो आधुनिक हिन्दी और उर्दू भाषाओं के पोषक देशभक्तों का यह तात्कालिक कर्तव्य जान पड़ता है।"●●●

—राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्ड

महाप्रस्थान

⊙ पूज्य तुम राजर्षि क्या ब्रह्मर्षि बहुगुण धाम।
व्यर्थ आज वशिष्ठ विश्वामित्र के संग्राम॥
बहुत मेरे अर्थ पुरुषोत्तम तुम्हारा नाम।
सतत श्रद्धायुक्त तुमको शत सहस्र प्रणाम॥

—श्री मैथिलीशरण गुप्त

अस्थि-शेष

⊙ ऋषे ! मरेगा कभी न भारतवर्ष तुम्हारे मन का।
अब तो वह बन रहा ध्येय जग भर के अन्वेषण का॥

टूट रही परतें स्वरूप अपना धुलता जाता है।
मंद-मंद मुद्रित सरोज का मुख खुलता जाता है॥

एक हाथ में कमल एक में धर्म दीप्त विज्ञान।
लेकर उठने वाला है धरती पर हिन्दुस्तान॥

—'दिनकर'

आ० सं० १२६
२८-६-५८

स्पीकर भवन लखनऊ
१५.२.५१ ई०
२८.७.५८

प्रिय भाई पुरुषोत्तम जी,

आपका प्रेषित वैशाख का पत्र मिला। इतने वर्षों बाद आपने मुझे स्मरण किया, इस पर मुझे स्वभावतः सुख मिला। आपने संवत् १९८८ का मेरा लिखा हुआ पत्र जो मेरे स्मरणार्थ भेजा है उसे पढ़ कर पुरानी बात हरी हो गयी और हृदय को, अतीत की याद करके भी हुआ परन्तु अपना स्मरण कराने के लिए उस पत्र को भेजने की आवश्यकता न थी। मैं अपने पुराने सहयोगियों को जल्दी भूला नहीं करता। हिन्दी के काम में मैं तो सदा ही रहता ही हूँ। भारतीय विधान परिषद् में भी मैं मुख्य कर इसी कार्य की ओर दृष्टि रखता हूँ। पं० जवाहरलाल जी जिनकी आपने चर्चा की है मेरे पुराने सहयोगी और मित्र हैं। परन्तु हिन्दी के विषय में उनका दृष्टिकोण मेरे दृष्टिकोण से कुछ भिन्न है। वह तो मेरे मत को अच्छी तरह जानते हैं और हमारी कुछ बातें भी हो चुकी हैं। विधान परिषद् सम्बन्धी काँग्रेस दल की आगामी बैठकों में यह प्रश्न तो हमारे सामने कई बार उठ चुका है। अपनी ओर से यत्न कर रहा हूँ। बहुत हिन्दी-प्रेमी भी सभ्य हैं परन्तु विरोधी भी बहुत हैं। विधान परिषद् राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार करेगी अथवा नहीं यह तो ईश्वर के हाथ में है किन्तु इतना मेरा निश्चय है कि अन्त में चाहे अभी चाहे कुछ दिन बाद हिन्दी ही राष्ट्रभाषा के रूप में ~~[illegible]~~ होगी।

विश्वास है आप स्वस्थ होंगे।

आपका भेजा हुआ पत्र वापस करता हूँ।

शुभेच्छु
पुरुषोत्तमदास टण्डन

(२१३३)

स्पीकर-भवन, लखनऊ

१३-११-१९३८

प्रिय पंडित देवीदत्त जी, वन्दे

आपका ८ तारीख का पत्र मुझे मिला। "इस बात का आश्वासन मिलने पर ही मैंने निर्णायक होना स्वीकार किया था कि सम्मतियां गुप्त रखी जायेंगी" — इस वाक्य से मुझे बहुत गलत-फहमी जान पड़ती है — नियमावली इस विषय में स्पष्ट है। आपकी ठा. श्रीनाथ सिंह से जो बातें हुईं उनका बोध तो मैं नहीं जानता। किन्तु समिति ने या मैंने कभी इस बात का वादा या संकेत नहीं किया था कि सम्मतियां नहीं छापी जायेंगी। पर यह बात, उपरप्रश्न मुझे आप के निर्णायक बनने के बाद मालूम हुई थी कि आपकी इच्छा है कि आपकी सम्मति न छापी जाय किन्तु आप स्वयं सोचें कि जब औरों की सम्मतियां छापी जा रही हैं तब आपकी सम्मति न छापी जाय यह कैसे हो सकता था। यह अवश्य हो सकता था कि किसी की सम्मति न छापी जाय किन्तु जो स्थिति उपस्थित हुई उसमें परिषद को यही उचित लगा कि सम्मतियां प्रकाशित की जायें।

यदि आपकी सम्मति के छापने में कुछ गलती हो गयी है तो अवश्य आप श्री ठाकुर श्रीनाथ सिंह जिनको का प्रधान मंत्री को लिखकर शुद्ध और दुरुस्त छपवा सकते हैं।

सम्मतियों के छपने से आपको नाराज़ कर

का शेषांश]

स्पीकर भवन, लखनऊ

१९३

कुछ ऐसा लगता है। किन्तु
उनके लिये के ज्ञान बूझ कर प्रयास
के कारण पहुंचाया हो ऐसा तो नहीं
है। लिखे जाने के कारण के प्रयास:
पढ़ने वाले की इच्छा व
लिखने की लिखावट के
कारण हो जाता है। वास्तव में
पाठकों के लिये लिखने को
लेकर इतना चिन्तित होना
चाहिये कि उनकी समझ के
अनुसार - [illegible]
समझने की [illegible]
लिखने का अभ्यास किया जाय
लेखन का ही विषय रहा है।
धन्यवाद के साथ
भवदीय
भुवनेश चन्द्र खण्डूरी

पत्र ३

आ० सं० २२८
२८-७-६८

(२२८)

१० लिन्टन रोड
लाहौर
२२ जुलाई १९६८

प्रिय पंडित जगन्नाथ जी, प्रणाम.

बहुत दिनों से आपके दर्शन नहीं हुए। सहसा 'पंजाब-केसरी' में आपके प्रिय पुत्र के स्वर्गवास का शोकसमय समाचार पढ़कर बहुत खेद हुआ। किन शब्दों में आपके इस दुःख में सहानुभूति प्रगट करूँ! गीता के निम्न लिखित श्लोक का स्मरण कराते हुए विश्वास करता हूँ कि ईश्वर आपको इस दुःख के सहन करने की शक्ति देगा —

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना॥

आपका
भुवनेश चन्द्र खण्डूरी